हरिभूमि

भिवानी-दादरी भूमि

रोहतक, रविवार 21 दिसंबर 2025

11 वाहन नया हो या पुराना, कोहरे व रात्रि में सुरक्षा ...

12 बेरला में दंपति ने लगाया फंदा एफएसएल टीम मौके ...

खबर संक्षेप

श्मशान भूमि की व्यवस्था करने की मांग की

भिवानी। बहुजन समाज पार्टी के नेता पवन ठाकुर ने मिनी बायपास के उस पार विकसित हो रहे सेक्टरों एवं रिहायशी कॉलोनियों में दाह संस्कार के लिए श्मशान भूमि की गंभीर कमी को लेकर नगर परिषद व जिला प्रशासन से तत्काल कदम उठाने की मांग की है। पवन ठाकुर ने कहा कि मिनी बायपास के उस पार भारत नगर, बैंक कॉलोनी, एमसी कॉलोनी, विकास नगर, कोट रोड क्षेत्र से जुड़ी अनेक गलियां तथा आसपास की अन्य कॉलोनियां पूर्ण रूप से आबाद हो चुकी हैं। इन क्षेत्रों में हजारों परिवार निवास कर रहे हैं, लेकिन आज भी दाह संस्कार हेतु श्मशान भूमि उपलब्ध नहीं है, जो प्रशासनिक लापरवाही को दर्शाता है।

बच्चों को ध्यान के लाभों की जानकारी दी

भिवानी। ढाणी हनुमान स्थित राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय भिवानी के प्रांगण में प्रधानाचार्य राजकुमार यादव के नेतृत्व में शनिवार को ध्यान दिवस मनाया गया। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 6 दिसंबर 2024 को सर्वसम्मति से 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस के रूप में घोषित किया गया। इस अवसर पर आयुष विभाग से योग सहायक कविता अहलावत ने बच्चों को ध्यान करना और ध्यान से होने वाले लाभ बताए। उन्होंने बताया कि इस वर्ष ध्यान दिवस एक विश्व, एक हृदय की थीम पर आयोजित होगा। विद्यालय की डीपीई प्रोमिला ने बच्चों को बताया कि ध्यान करने से तनाव में कमी, सामान्य रक्तचाप, भावनात्मक स्वास्थ्य को बढ़ावा देता है।

परिवहन विभाग में उपनिरीक्षक अमरजीत ने तीन मेडल जीतकर बनाया नेशनल रिकॉर्ड

ऑल इंडिया सिविल सर्विसीज एथलेटिक्स चैंपियनशिप में दो कर्मचारियों ने जीते पदक

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

खेल व खिलाड़ियों की धरती कहे जाने वाले भिवानी के सरकारी कर्मचारियों ने एक बार फिर साबित कर दिया कि अगर जज्बा हो तो दफ्तर की फाइलों के बीच भी अपनी फिटनेस और खेल के जुनून को जिंदा रखा जा सकता है। बिहार के पटना स्थित पाटलिपुत्र खेल स्टेडियम में 13 से 15 दिसंबर को आयोजित ऑल इंडिया सिविल सर्विसीज एथलेटिक्स चैंपियनशिप 2025-26 में भिवानी के दो जांबाज कर्मचारियों ने पदकों की झड़ी लगाकर जिले का नाम पूरे देश में रोशन किया है। प्रतियोगिता में देशभर से करीबन 1300 खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभागिता दिखाई थी। पदक विजेता दोनों कर्मचारियों अमरजीत व गांव बड़ेसरा निवासी अमित का शनिवार को भीम स्टेडियम में पहुंचने पर खेलप्रेमियों ने जोरदार स्वागत किया।

समर्थ ग्रीन सोसायटी के सदस्यगण विजय सिंह गोठड़ा, राजकुमार श्योराण, कर्ण सिंह श्योराण, नरेंद्र घणघस, श्रीपाल यादव, प्रवक्ता बालकिशन, रितेश मित्तल, राजेश सिंघल, अमित मित्तल, निदेशक शमशेर सिंह, सुमन बालाजी, विजेता कर्मचारी अमरजीत के पिता रणबीर सिंह, सरपंच बलवान, सरपंच सतबीर, कैप्टन उमेद, एसआई कृष्ण, धर्मबीर सांगवान, अशोक तालु, एसआई सुमेर, सुमेर सुखपुरा, सुरेश ठेकेदार, अधिवक्ता विकास सिंहमार, चंद्रभान, सुरेंद्र शर्मा, मोनू वर्मा आदि मौजूद रहे।

भिवानी। पदक विजेता कर्मचारियों का स्वागत करते खेलप्रेमी।

इस दौरान समर्थ ग्रीन सोसायटी के सदस्यों ने गांव शिमली निवासी अध्यापक भूपेंद्र चाहर के पुत्र रंजन चाहर को भारतीय सेना में लेफ्टीनेंट पद पर चयन होने पर सम्मानित किया। ऑल इंडिया सिविल सर्विसीज एथलेटिक्स चैंपियनशिप में भिवानी की डीसी कॉलोनी के निवासी और हरियाणा परिवहन विभाग में परिवहन उपनिरीक्षक के पद पर तैनात अमरजीत चैंपियनशिप के सबसे बड़े सितारों में से बनकर उभरे। उपनिरीक्षक अमरजीत ने 40 से 60 आयु वर्ग में 4 बाई 100 मीटर रिले रेस स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता और साथ ही नेशनल रिकॉर्ड भी अपने नाम किया। 100 मीटर दौड़ में सिल्वर मेडल, 400 मीटर दौड़ में ब्रोंज मेडल पर कब्जा जमाया। इस प्रतियोगिता में सिर्फ अमरजीत ही नहीं गांव बड़ेसरा के रहने वाले और बागवानी विकास अधिकारी अमित ने भी ट्रैक पर अपनी चमक बिखेरी। उन्होंने 100 मीटर दौड़ में सिल्वर पदक, 200 मीटर दौड़ में ब्रोंज मेडल तथा 4 बाई 100 मीटर रिले में सिल्वर मेडल अपने नाम किया। कोच देवेंद्र सिंह ने बताया कि उन्होंने 17 वर्षो तक भारतीय थल सेना में देश सेवा की तथा वर्ष 2018 में सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद उनमें खेल का जुनून जागा, जिसके बाद उन्होंने खेलों में भागीदारी की।

खेल स्टेडियम में स्थापित किया ओपन एयर जिम

चरखी दादरी। गांव डोहका हरिया स्थित चौधरी सूबेसिंह स्टेडियम में व्यायाम करने तथा सुबह शाम सैर करने आने वाले युवाओं सहित सभी ग्रामीणों को अब ओपन एयर जिम की सुविधा मिलेगी, इससे ग्रामीणों में उत्साह है। गौरतबल है कि एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक ने समाजसेवा कार्यो के तहत अपनी सीएसआर पहल के अंतर्गत स्टेडियम में अत्याधुनिक ओपन एयर जिम की स्थापना कर ग्रामीण क्षेत्र में फिटनेस को नई दिशा दी है।

ये ओपन एयर जिम युवाओं, खिलाड़ियों और स्थानीय नागरिकों के लिए आकर्षण का केंद्र बन चुका है। यह पूरी तरह से निःशुल्क सेवा है। बैंक अधिकारियों व मौजिज ग्रामीणों ने बताया कि ओपन एयर जिम में डबल एयर वॉकर, चेस्ट प्रेस, लेग प्रेस, पैरेलल बार, क्रॉसफिट सहित कुल 12 आधुनिक फिटनेस उपकरण लगाए गए हैं। जिम में प्रतिदिन बड़ी संख्या में ग्रामीण, बुजुर्ग, युवा निःशुल्क लाभ उठा रहे हैं, जिससे क्षेत्र में स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा मिल रहा है। बैंक द्वारा स्टेडियम परिसर में खेल आधारित वॉल पेंटिंग एवं दिशा-सूचक बोर्ड भी लगाए गए हैं, जिससे न केवल परिसर का सौंदर्य बढ़ा है, बल्कि आगंतुकों को सुविधाजनक मार्गदर्शन भी मिल रहा है। इस मौके पर एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक की तरफ से क्षेत्रीय प्रमुख मुकेश अनेजा, शाखा प्रबंधक प्रदीप कुमार, क्लस्टर हेड अमित सचदेवा, मार्केटिंग मैनेजर रविकांत यादव, कालूवाला की तरफ से अनिल आदि मौजूद रहे।

खो-खो में खेड़ीबुरा की टीम ने मारी बाजी

चरखी दादरी। गांव लाड़ में चल रही खंड स्तरीय खेल प्रतियोगिता के समापन पर बतौर सरपंच प्रदूमन, धर्मसेना प्रदेश सचिव ओमप्रकाश व प्रवीण गोलागढ़ ने खिलाड़ियों को सम्मानित उनका हौसला अफजाई की। बाढ़ड़ा खंड के तहत विभिन्न खेलों के जरिए ग्रामीण युवाओं ने अपनी खेल प्रतिभा को दिखाया। मेरा युवा भारत केंद्र ब्लॉक को-ऑर्डिनेटर प्रवीण गोलागढ़ ने बताया कि बॉलीवाल में लाड़ ए विजेता व लाड़ भी उपविजेता रही। वहीं खो-खो में खेड़ीबुरा की टीम विजेता व कारीधारणी उपविजेता रही। पुरुष 400 मीटर दौड़ में संजय प्रथम व आशीष द्वितीय स्थान पर रहे। महिला वर्ग 100 मीटर में सीमा खेड़ीबुरा पहला व मधु ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। शॉट पुट पुरुष में शशिकांत ने पहला, आशीष ने दूसरा, महिला वर्ग में मधु ने पहला व स्नेहा ने दूसरा स्थान प्राप्त किया।

वहीं लम्बी कूद पुरुष वर्ग में संजय पहला, अमित ने द्वितीय, वहीं महिला वर्ग में सीमा ने पहला, मधु ने दूसरा स्थान पाया। ऊंची कूद में अमित ने पहला व सुधीर ने दूसरा तथा महिला वर्ग मधु ने पहला व स्नेहा ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। ब्लॉक कोर्डिनेटर प्रवीण गोलागढ़ ने कहा कि ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में विजेता टीमों एवं एथलेटिक्स खेल में प्रथम रहे खिलाड़ियों को सम्मानित कर जिला स्तर पर चयन किया। प्रतियोगिता में निर्णायक की भूमिका कुणाल कोच लाड़ व रोहित कोच लाड़ ने परमजीत कोच खेड़ीबुरा, अजय कोच कारीधारणी ने निभाई। ग्राम पंचायत लाड़ सरपंच प्रदूमन व ब्लॉक कोर्डिनेटर प्रदीप सोहांसरा ने बताया कि खेलकूद प्रतियोगिताएं न केवल मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि यह व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। इस अवसर पर सरपंच प्रदूमन शर्मा, रोहित कोच लाड़, धर्मसेना प्रदेश महासचिव ओमप्रकाश लाड़, ब्लॉक कोर्डिनेटर प्रदीप सोहासंरा, परमजीत कोच, अजय कोच, राजकुमार सैन, राजेश, देसराम व राजेंद्र पीटीआई आदि मौजूद रहे।

भिवानी। विजेता टीम को सम्मानित करते अतिथि। फोटो : हरिभूमि

हलवासिया स्कूल में विद्यार्थियों को करवाया ध्यान योग का अभ्यास

पढ़ाई में बच्चों की बनती है रुचि:अलका तंवर

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

हलवासिया विद्या विहार में 'आर्ट ऑफ लिविंग' संस्था के सदस्य अलका तंवर, यतींद्रनाथ व अर्जुन प्रताप सिंह ने शिरकत की।

कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना से की गई। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को विश्व ध्यान दिवस के बारे में जानकारी देकर ध्यान योग के माध्यम से मानसिक शांति एवं शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना रहा। कार्यक्रम के दौरान अलका तंवर एवं यतींद्रनाथ ने विद्यार्थियों से अनेक प्रश्न किए जिनके बच्चों ने बड़े ही उत्साहित होकर अलग-अलग जवाब दिए। उन्होंने बच्चों को अभ्यास करवाते हुए बताया कि ज्ञान के माध्यम से हमें एकाग्रता, आत्म नियंत्रण और मानसिक शांति प्राप्त होती है,जिससे पढ़ाई में बच्चों की रुचि बनती है।

भिवानी। 'आर्ट ऑफ लिविंग के ध्यान योग कार्यक्रम को संबोधित करते यतींद्रनाथ। फोटो : हरिभूमि

विद्यालय के पुरातन छात्र अर्जुन प्रताप ने बताया ज्ञान की सही प्रक्रिया हमें एक बेहतर इंसान बनने में सहायक है। विद्यालय प्रशासक डॉ. शमशेर सिंह अहलावत ने कार्यक्रम की सराहना की। विद्यालय प्राचार्य विमलेश आर्य ने बताया कि ध्यान जीवन का अभिन्न अंग है, हमें ध्यान योग का अभ्यास करना चाहिए, जिससे हम अपने लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर उपप्राचार्य दीपक वशिष्ठ एवं माध्यमिक विभाग प्रमुख सुवीरा गर्ग सहित माध्यमिक विभाग का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

गांवों में आधुनिक पेयजल व्यवस्था पर 47 करोड़ खर्च होंगे: सांगवान

चरखी दादरी। विधायक सुनील सांगवान ने बताया कि दादरी विधानसभा के आधा दर्जन गांवों में पेयजल व्यवस्था पर करीब 47 करोड़ रुपए की राशि खर्च की जाएगी। जनस्वास्थ्य विभाग द्वारा तैयार की गई इस परियोजना की प्रशासनिक स्वीकृति मिल चुकी है। उम्मीद है कि नए वर्ष में कार्य शुरू हो जाएगा और आगामी गर्मी सीजन के दौरान पेयजल की किल्लत नहीं रहेगी। पेयजल व्यवस्था आधुनिक तरीके से तैयार की जाएगी।

विधायक सुनील सांगवान ने बताया कि जनस्वास्थ्य विभाग द्वारा गांव मिसरी, कासनी, सौंप, कोहलावास, लांबा व सांवड़ के दो जलघरों तक लोहारू कैनाल से करीब साढ़े 10 किलोमीटर लंबी पेयजल के लिए पाइप लाइन बिछाई जाएगी। पाइप लाइन उक्त सभी गांवों के जलघरों तक पहुंचेगी और पर्याप्त मात्रा में नही पानी टैंकों में पानी पहुंचाया जाएगा। विधायक ने बताया कि जनस्वास्थ्य विभाग द्वारा तैयार की गई इस आधुनिक परियोजना में बिजली के साथ-साथ सोलर सिस्टम भी लगाया जाएगा। ताकि जलघरों के टैंकों तक पानी पहुंचने में कोई दिक्कत न आए। विभाग द्वारा परियोजना के लिए टेंडर प्रक्रिया शुरू कर दी है और जनवरी माह में टेंडर लगने की उम्मीद है। अधिकारियों को निर्देश दिए कि पेयजल व्यवस्था को शीघ्र पूरा करें।

दो युवाओं ने रेयर ब्लड ग्रुप बी नेगेटिव रक्तदान कर बचाई जान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

> रक्त ही जीवन का एकमात्र ऐसा पदार्थ है, जिसका निर्माण किसी फैक्ट्री मे नहीं हो सकता :राजेश डुडेजा

रक्तदान को महादान कहा जाता है, रक्त ही जीवन का एकमात्र ऐसा पदार्थ है, जिसका निर्माण किसी फैक्ट्री मे नहीं हो सकता। रक्त की पूर्ति केवल रक्तदान से ही पूरी हो सकती है, इसलिए हमें नियमित रक्तदान करते रहना चाहिए, ये बात शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने आपातस्थिति में रक्तदान करने वाले रक्तदाताओं को सम्मानित करते हुए कही।

उन्होंने बताया कि निजी अस्पताल में दाखिल मरीज के लिए रेयर ब्लड ग्रुप बी नेगेटिव की दो यूनिट अर्जेंट तौर पर आवश्यकता पड़ी तो परिजनों ने रक्तवीर डुडेजा से संपर्क साधा। उन्होंने ये सूचना तुरंत ही ग्रुप में डाली, जिसके बाद दो सक्रिय रक्तदाता देव वर्मा व गोरीपुर से विकास कुमार ब्लड बैंक में पहुंचे तथा रक्तदान कर ब्लड की पूर्ति की। शतकवीर रक्तदाता राजेश डुडेजा ने कहा कि रक्तदान ऐकमात्र ऐसा सामाजिक कार्य है, जिसमें कोई पैसा नहीं लगता, बल्कि रक्तदान करने वाले को भी शारीरीक एंव मानसिक फायदा मिलता है। उन्होंने कहा कि रक्तदान करके हम किसी जरूरतमंद की जिंदगी बचा सकते हैं। इस अवसर पर डॉ. रोहित ने बताया कि जरूरत के समय सूचना मिलने पर ब्लड बैंक में पहुंचे व रक्तदान करें। इस अवसर पर लेब टेक्निश्यन केशव व सतीश भी मौजूद रहे।

भिवानी।रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित करते रक्तवीर राजेश डूडेजा। फोटो : हरिभूमि

कार्यक्रम में ध्यान को दिनचर्या का हिस्सा बनाने पर बल दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

बवानी खेड़ा के बी. के. वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में पवित्रता के साथ 'अंतर्राष्ट्रीय ध्यान दिवस' हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें कक्षा छठी से कक्षा आठवीं तक के विद्यार्थियों ने योगिक क्रियाओं का अभ्यास किया। योगाचार्य गजानन कौशिक के साथ आयुष विभाग से डॉक्टर संजय एवं डॉक्टर निशा ने कार्यक्रम में शिरकत की। विद्यालय प्राचार्य पंकज कुमार मिश्रा, कनिष्ठ विभाग संचालिका मंजू मलिक, मनीष शंकर द्वारा अतिथियों को पुष्पगुच्छ एवं समृद्धि चिन्ह भेंट कर उनका स्वागत सत्कार किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ शांति मंत्र के साथ हुआ। विद्यालय प्राचार्य ने विद्यालय में पधारे अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि आज हर कोई व्यक्ति तनाव की स्थिति में है। उन्होंने कहा कि मेरा विश्वास है यदि हम प्रतिदिन ध्यान को अपने जीवन में ग्रहण करें तो बहुत सी मानसिक समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं। डॉ संजय ने 'विश्व ध्यान दिवस' को मनाए जाने की पूरी प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए बताया कि यूनाइटेड नेशन के द्वारा 21 दिसंबर को विश्व ध्यान दिवस के रूप में मनाने का सुझाव दिया गया। उन्होंने ध्यान को दिनचर्या का हिस्सा बनाने पर बल दिया। डॉ निशा ने बताया कि आज दूसरी बार ध्यान दिवस मना रहे है। इसको मनाने की शुरुआत 2024 से शुरू हुई। यह 21 दिसंबर को इसलिए मनाया जाता है क्योंकि यह साल का सबसे छोटा दिन होता है। योगाचार्य गजानन कौशिक ने ध्यान से पहले कुछ यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया। उन्होंने विद्यार्थियों को कपालभांति, अनुलोम-विलोम, भ्रामरी, उज्जयी तथा प्रणव प्राणायाम का अभ्यास करवाते हुए जीवन में इनकी महत्त्ता पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधन समिति के सचिव योगेश शर्मा, सदस्य सुरेश जांगड़ा, सुरेश शर्मा, वरिष्ठ विभाग संचालक योगेन्द्र सिंह, सिंपी, शिखा सहित माध्यमिक विभाग का समस्त स्टाफ उपस्थित रहा।

समर्पित कार्यकर्ता असली ताकत: फणीनंद्रनाथ

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की संगठनात्मक मजबूती को लेकर शनिवार को तोशाम के पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाऊस में एक महत्वपूर्ण शक्ति केंद्र बैठक का आयोजन किया गया। बैठक का मुख्य उद्देश्य आगामी राजनैतिक चुनौतियों को देखते हुए धरातल पर पार्टी के आधार को और अधिक सशक्त बनाना था।

बैठक में मुख्य वक्ता के तौर पर भाजपा के प्रदेश संगठन महामंत्री फणींद्रनाथ शर्मा ने शिरकत की, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा के जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने की। मुख्य वक्ता फणींद्रनाथ शर्मा ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए स्पष्ट किया कि भाजपा की असली ताकत उसका समर्पित कार्यकर्ता है।

उन्होंने संगठन की मजबूती के लिए माइक्रो मैनेजमेंट पर जोर देते हुए कहा कि हर शक्ति केंद्र को अपने अधीन आने वाले बूथों पर पैनी नजर रखनी होगी और केंद्र व राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं को घर-घर तक पहुंचाना होगा। शर्मा ने निर्देश दिए कि पन्ना प्रमुखों के साथ निरंतर बैठकें की जाएं ताकि मतदाताओं के साथ सीधा और जीवंत संपर्क बना रहे। उन्होंने कार्यकर्ताओं में जोश भरते हुए कहा कि संगठन में अनुशासन ही सफलता की कुंजी है। हर कार्यकर्ता को एक सिपाही की भांति पार्टी की विचारधारा का प्रचार करना चाहिए।

अभेद्य किला बना रहेगा

बैठक की अध्यक्षता कर रहे जिला अध्यक्ष विरेंद्र कौशिक ने संगठन महामंत्री को आश्वस्त किया कि भिवानी जिला भाजपा का अभेद्य किला बना रहेगा। उन्होंने कहा कि जिले के सभी शक्ति केंद्रों पर काम सुचारू रूप से चल रहा है और कार्यकर्ताओं में भारी उत्साह है। कौशिक ने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में हरियाणा सरकार और प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने जो विकास कार्य किए हैं, वे हमारी सबसे बड़ी पूंजी हैं। उन्होंने कहा कि संगठन महामंत्री द्वारा दिए गए दिशा-निर्देशों को हम अक्षरशः लागू करेंगे। भिवानी का एक-एक कार्यकर्ता पूरी निष्ठा के साथ आने वाले समय में पार्टी के हाथ मजबूत करने के लिए तैयार है।

सामाजिक व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे गिरदावर: दिलबाग

पूर्व प्रधान बनारसीदास गिरदावर के निधन पर जताया शोक

भिवानी। जाट धर्मशाला में शनिवार को कार्यकारिणी की विशेष शोक सभा हुई। यह सभा धर्मशाला के वर्तमान संरक्षक एवं पूर्व प्रधान बनारसी दास गिरदावर के 18 दिसंबर को असामयिक निधन पर शोक व्यक्त करने के लिए बुलाई गई थी। सभा की अध्यक्षता जाट धर्मशाला के प्रधान दिलबाग सिंह सांगवान ने की। बैठक के दौरान उपस्थित सभी सदस्यों ने बनारसीदास गिरदावर के निधन को समाज और संस्था के लिए एक अपूरणीय क्षति बताया। उनकी आत्मिक शांति के लिए सभा में दो मिनट का मौन रखा गया और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि वे दिवंगत आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान दें। इस दौरान प्रधान दिलबाग सिंह सांगवान ने कहा कि बनारसी दास बेहद मिलनसार और सामाजिक व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति थे। उन्होंने कहा कि धर्मशाला के विकास और समाजसेवा में गिरदावर का योगदान अविस्मरणीय है। उनके निधन पर चंद्रसिंह आर्य, धर्मबीर सिंह नेहरा, सुरेंद्र सिंह ठेकेदार, रणबीर सिंह कालुवास, जयप्रकाश बोहरा, कमल सिंह प्रधान, तिलकराज नरवाल, करतार सिंह, कटारसिंह सांगवान, मनदीप गोदारा, रविंद्र बिट्टू, संदीप सांगवान, अजीत सांगवान, गंगाराम श्योराण, बलबीर बजाड़, जगपाल घणघस व हर्षवर्धन मान ने शोक जताया।

आयोजन | भीम स्टेडियम से सीजेएम ने हरी झंडी दिखाकर किया रवाना

नशामुक्त हरियाणा अभियान को लेकर युवाओं ने लगाई 'रन फॉर ड्रग फ्री' दौड़

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के चेयरमैन एवं जिला एवं सत्र न्यायाधीश डीआर चालिया के निर्देशानुसार मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट एवं प्राधिकरण के सचिव पवन कुमार की अध्यक्षता में नशामुक्त हरियाणा अभियान के तहत भीम स्टेडियम में 'रन फॉर ड्रग्स फ्री' दौड़ का आयोजन हुआ। सीजेएम पवन कुमार ने रन फॉर ड्रग्स फ्री दौड़ को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में युवाओं, विद्यार्थियों, खेल प्रेमियों ने पूरे जोश और उत्साह के साथ भाग लिया। दौड़ के माध्यम से युवाओं को नशा से दूर रहकर समाज को नशा मुक्त बनाने का संदेश दिया गया। दौड़ में शामिल युवाओं ने हाथों में नशा विरोधी संदेशों की पट्टिका और बैनर लेकर पूरे शहर में जागरूकता का संदेश फैलाया। इस अवसर पर जिला खेल अधिकारी विद्यानंद यादव सहित अनके कोच मौजूद रहे।

भिवानी। नशामुक्त हरियाणा अभियान को लेकर निकाली गई 'रन फॉर ड्रग फ्री' दौड़ को रवाना करते सीजेएम पवन कुमार।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीजेएम पवन कुमार ने कहा कि नशा समाज के लिए गंभीर चुनौती बन चुका है, जो विशेष रूप से युवाओं के भविष्य को अंधकार की ओर धकेल रहा है। उन्होंने कहा कि नशा केवल व्यक्ति को ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को प्रभावित करता है। युवा देश की शक्ति हैं और यदि वही नशे की चपेट में आ जाता है तो राष्ट्र की प्रगति बाधित हो जाती है। ऐसे में युवाओं को किसी भी प्रकार के नशे से दूर रहना जरूरी है। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे स्वयं नशे से दूर रहें और अपने आसपास के लोगों को भी इसके खिलाफ जागरूक करें। सीजेएम पवन ने कहा कि खेल, योग, पढ़ाई और रचनात्मक गतिविधियां युवाओं को नशे से दूर रखने का सशक्त माध्यम हैं। उन्होंने कहा कि विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा समय-समय पर ऐसे जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाते रहेंगे, ताकि समाज के हर वर्ग तक यह संदेश पहुंच सके।

सरकारी योजनाओं की जानकारी भी सांझा की

उन्होंने बताया कि नशा तस्करी और नशीले पदार्थों के सेवन के विरुद्ध कानून में कड़े प्रावधान हैं और ऐसे अपराधों में संलिप्त लोगों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाती है। साथ ही नशे के शिकार व्यक्तियों के पुनर्वास और उपचार के लिए सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की जानकारी भी सांझा की गई। उन्होंने कहा कि नशामुक्त समाज के निर्माण के लिए केवल सरकारी प्रयास ही नहीं, बल्कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की सहभागिता जरूरी है। माता-पिता, शिक्षक और मित्र सभी की भूमिका महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम के दौरान युवाओं को नशा से दूर रहने की शपथ दिलाई गई।

चिकित्सा शिविर में 140 महिलाओं का स्वास्थ्य जांचा

भिवानी। भारत-पाकिस्तान के 1971 युद्ध में भारत की ऐतिहासिक जीत की खुशी में वूमैन हैल्पिंग सोसायटी एवं इंडियन वेटरन आर्गेनाईजेशन ने स्वास्थ्य पहल की। इस दौरान लोकप्रिय सुपरस्पेशलिटी अस्पताल के सहयोग से महिलाओं के लिए चिकित्सा जांच शिविर लगाया गया। शिविर के दौरान गाइनोकोलोजिस्ट डॉ. हर्ष शेखावत, मेडिकल ऑफिसर डॉ. मेघा, नर्सिंग स्टाफ रागिनी, फार्मासिस्ट अजय व पीयूष ने अपनी सेवाएं दी तथा 140 महिलाओं के स्वास्थ्य की जांच की तथा उन्हें आवश्यकतानुसार निःशुल्क दवाइयां वितरित की। इस दौरान संस्था द्वारा चिकित्सकों को सम्मानित भी किया।

खबर संक्षेप

चरखी दादरी। गोवंश के लिए स्वामणी तैयार करते प्रभात मंडल के सदस्य।

गो सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं: योगाचार्य पुरुषोत्तम

चरखी दादरी। प्रभात मंडल के सदस्यों द्वारा लगातार सामाजिक व धार्मिक कार्यों में प्रधान बजरंगलाल की अगुवाई में सहभागिता करने का प्रयास किया जाता रहता है। इसी कड़ी में मंडल सदस्य माह की प्रत्येक अमावस्या पर रावलधी बाईपास स्थित श्रीकृष्ण गौशाला पहुंचकर गौमाता व गौवंश को भोज्य पदार्थ अर्पित करते है। इसी कड़ी में प्रभात मंडल के सदस्य अमावस्या के दिन संध्या के समय गौशाला पहुंचकर गौमाता को चना चिलका, गुड़ व दलिया आदि से बनी सवामणी अर्पित की व हरे चारे की व्यवस्था में सहयोग किया। श्रीकृष्ण गौशाला के प्रबंधक प्रतिनिधि अनिल बंसल बिरोहडिया ने कहा कि हम सबको गौमाता के प्रति अपने कर्तव्य का अवश्य ही निर्वहन करना चाहिए। गौशाला को सभी के सहयोग और प्यार की जरूरत है। सभी क्षेत्रवासी अपना समय निकालकर गौशाला में प्रतिदिन अवश्य आए।

कोहरे और रात्रि में सुरक्षा के लिए रिफ्लेक्टर अनिवार्य :अशोक कुमार

जागरूकता कार्यक्रम में वाहन चालकों को रिफ्लेक्टर का महत्व बताया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

- एक माह तक चलेगा सड़क सुरक्षा अभियान: भारद्वाज

सामाजिक संस्था नेताजी सुभाष चंद्र बोस युवा जागृत सेवा समिति एवं सदाचारी शिक्षा समिति के संयुक्त तत्वावधान में सड़क सुरक्षा कार सेवा अभियान तथा हिट एंड रन कानून जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के तहत वाहन चालकों को कोहरे और रात्रि के समय सड़क सुरक्षा के लिए रिफ्लेक्टर पट्टी लगाने के महत्व के प्रति जागरूक किया गया। अभियान के संयोजक राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता अशोक कुमार भारद्वाज व निदेशक सावित्री यादव ने कहा कि वाहन चाहे नया हो या पुराना, उस पर रिफ्लेक्टर पट्टी लगाना जीवन सुरक्षा के लिए अत्यंत आवश्यक है। कार्यक्रम के दौरान आम नागरिकों से अपील की गई कि दोपहिया वाहन चलाते समय हेलमेट तथा चारपहिया वाहन में सीट बेल्ट का अनिवार्य रूप से प्रयोग करें और यातायात नियमों का पूर्ण पालन करें। कहा कि रिफ्लेक्टर पट्टी की चमक दूर से ही वाहन की उपस्थिति का संकेत देती है, जिससे सामने से आने वाले वाहन चालक समय रहते सतर्क हो जाते हैं और सड़क हादसों की आशंका काफी हद तक कम हो जाती है। इस अवसर पर पुलिस अधीक्षक सुमित कुमार एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव पवन कुमार के मार्गदर्शन में वाहन चालकों, शिक्षकों एवं अभिभावकों से अपने-अपने वाहनों पर रिफ्लेक्टर लगाने की अपील की गई। उन्होंने कहा कि छोटी-सी सावधानी बड़े हादसों को रोक सकती है। अभियान के सूत्रधार एवं राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता अशोक कुमार भारद्वाज तथा निदेशक सावित्री यादव ने कहा कि सड़क सुरक्षा को लेकर समाज के हर वर्ग को जागरूक होना जरूरी है। उन्होंने कहा कि रिफ्लेक्टर पट्टी की चमक वाहन चालकों के लिए सुरक्षा कवच का काम करती है और कई जानें बचाने में सहायक सिद्ध होती है। कार्यक्रम में ड्रग्स जैसे नशे के दुष्प्रभावों पर भी विस्तार से जानकारी दी गई। वक्ताओं ने कहा कि नशा केवल व्यक्ति ही नहीं, बल्कि पूरे परिवार और समाज को बर्बादी की ओर ले जाता है। युवाओं को नशे से दूर रखना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। हेलमेट और सीट बेल्ट को नियम नहीं, बल्कि जीवन रक्षक उपाय बताते हुए इनके पालन पर जोर दिया गया।

भिवानी। वाहनों को रिफ्लेक्टर की पट्टी लगाते हुए। फोटो : हरिभूमि

नियमों का पालन करें

अभियान के संयोजक अशोक कुमार भारद्वाज ने बताया कि देश के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत द्वारा भी युवाओं को नशे से दूर रहने की अपील की गई है। इसी उद्देश्य से संस्था द्वारा "नशा छोड़ो, जीवन जोड़ो" थीम-2025 के तहत जनसंदेश अभियान चलाया जा रहा है। साथ ही सड़क सुरक्षा को लेकर निरंतर जागरूकता फैलाई जा रही है, ताकि युवा यातायात नियमों का पालन करें और नशे की हालत में वाहन चलाने से बचें।

भिवानी। खेलकूद प्रतियोगिता के शुभारंभ अवसर पर मार्चपास्ट करते हुए।

डीएवी स्कूल में खेल समारोह का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| भिवानी

डीएवी. पुलिस पब्लिक स्कूल भिवानी ने दो दिवसीय भव्य खेल समारोह का आयोजन किया। इस खेल समारोह में कक्षा नर्सरी से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों ने अपने खेल कौशल का प्रदर्शन किया।

इस क्रीड़ा प्रतियोगिता में नर्सरी से दूसरी कक्षा तक 25 मीटर दौड़, 50मीटर दौड़, 100 मीटर दौड़, मंडूक दौड़,बंदर दौड़,बाधा दौड़, कक्षा तीसरी से पाँचवीं तक 100 मीटर दौड़, 200 मीटर दौड़,लेमन दौड़, त्रिपाद दौड़, कक्षा छठी से बारहवीं तक 100 मीटर दौड़,200मीटर दौड़, 400 मीटर दौड़, लंबी कूद,गोला फेंक आदि खेल स्पर्धाओं का आयोजन किया गया। इस खेल समारोह में भिवानी जनपद के पुलिस अधीक्षक सुमित कुमार बतौर मुख्य अतिथि रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्यातिथि के स्वागत से हुआ। मुख्यातिथि के स्वागत में छठी कक्षा के छात्र-छात्राओं जयनीत, नीतेश,रिहान, परीक्षित,नीशू,काव्या, महिमा ने 'वेलकम टू ऑल' स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

सर्वोत्तम सदन का चल विजयोपहार विवेकानंद सदन को मिला

चारों सदनों के द्वारा मुख्य अतिथि के सम्मान में परेड किया गया और खेल की शपथ दिलाई गई। ध्वज स्थापन के उपरांत नौवीं से बारहवीं ने अनुक्रम दौड़ की और पारितोषिक प्राप्त किए। पाँचवीं से अरिहान, सातवीं से हर्ष और ग्यारहवीं से प्रिया को खेल में उत्तम प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया। कोच रणवीर सिंह, नरेंद्र सिंह और मुकेश कुमार को उनके सराहनीय कार्य के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया।विगत सत्र 2024-25 के सर्वोत्तम सदन का चल विजयोपहार विवेकानंद सदन को दिया गया। अतिथि ने कहा हर खिलाड़ी जो मैदान में उतरा है वह विजेता है क्योंकि उसने भाग लेने का साहस दिखाया है। दूसरे दिन के वार्षिक खेल समारोह के मुख्य अतिथि वाइस चेयरमैन एस.सी. कमीशन हरियाणा बिजेंद्र बड़गुजर एवं प्रसिद्ध स्वर्ण व्यवसायी, समाजसेवी वर्धमान ज्वैलर्स के मालिक सचिन जैन रहे । बड़गुजर ने कहा कि आज के दौर में जहाँ हम डिजिटल दुनिया में खोते जा रहे हैं वहाँ मैदान में पसीना बहाना आपकी शारीरिक और मानसिक सेहत के लिए बहुत जरूरी है। विद्यालय प्राचार्या कुसुम शर्मा ने छात्र-छात्राओं से खेल की ही भाँति शैक्षणिक क्षेत्र में भी पूर्ण मनोयोग से काम में जुट जाने की अपील की।

बाल विवाह बच्चों के सर्वांगिण विकास में बाधक

- आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस में बाल विवाह मुक्त भारत एवं बालिका शिक्षा पर कार्यशाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बवानीखेड़ा

मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस के असेंबली ग्राउंड में बाल विवाह मुक्त भारत के प्रति जागरूकता को लेकर एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को बाल विवाह के दुष्परिणामों तथा इसके सामाजिक और कानूनी पहलुओं की जानकारी देना था।

कार्यक्रम में विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यशाला को संबोधित करते हुए विद्यालय के प्राचार्य नितीश मिश्र ने प्रभावशाली वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि बाल विवाह बच्चों के शारीरिक, मानसिक और शैक्षिक विकास को बाधित करता है। उन्होंने शिक्षा को इस सामाजिक कुरीति को समाप्त करने का सबसे सशक्त माध्यम बताते हुए विद्यार्थियों से जागरूक बनने और समाज में सकारात्मक संदेश फैलाने का आह्वान किया। प्रिंसिपल मिश्र द्वारा इस अवसर पर बाल विवाह न करने की शपथ दिलाई गई। इसी दौरान विद्यालय के सभागार में ष्लड़कियों की शिक्षा कितना जरूरी विषय पर एक अन्य कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम प्राचार्य नितीश मिश्रा के मार्गदर्शन में कनिका एवं स्वीटी द्वारा सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। कार्यशाला में लड़कियों की शिक्षा के महत्व, आत्मनिर्भरता और समान अधिकारों पर विशेष चर्चा की गई। इस अवसर पर कोर्डिनेटर मंजु भरद्वाज एवम सभी महिला अध्यापिकाएं उपस्थित रहीं और उन्होंने अपने विचार साझा कर छात्राओं को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम सामाजिक जागरूकता और महिला सशक्तिकरण का सशक्त संदेश देकर संपन्न हुआ।

बवानीखेड़ा। मिलकपुर स्थित आनंद स्कूल फॉर एक्सीलेंस के असेंबली ग्राउंड में बाल विवाह मुक्त भारत के प्रति जागरूकता को लेकर एक महत्वपूर्ण कार्यशाला का आयोजन में उपस्थितजन। फोटो : हरिभूमि

सरकारी स्कूल के पूर्व छात्र ने बढ़ाया मदद का हाथ बच्चों को वितरित किए गर्म वस्त्र व पाठ्य सामग्री

भिवानी। शिक्षा के प्रति समर्पण और समाज कल्याण की भावना तब और भी गहरी हो जाती है, जब कोई व्यक्ति अपनी जड़ों को नहीं भूलता। भिवानी में प्राकर्मी योद्धा फाउंडेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम इसी भावना का जीवंत उदाहरण बना। इस पहल के तहत जरूरतमंद विद्यार्थियों को कड़कड़ाती ठंड से राहत देने के लिए स्वेटर और भविष्य संवारने के लिए शैक्षणिक सामग्री वितरित की गई। कार्यक्रम में बतौर मुख्यतिथि नप के पूर्व चेयरमैन राजकुमार तंवर ने शिरकत की। उन्होंने बताया कि इस पूरी मुहिम की नींव एक ऐसे वरिष्ठ सरकारी अधिकारी की संवेदनशील सोच पर टिकी है, जिन्होंने स्वयं कभी इसी स्कूल में जमीन पर बैठकर शिक्षा ग्रहण की थी।

आयुष विभाग ने मनाया इंटरनेशनल मेडिटेशन-डे

भिवानी। लोगों को योग के बारे में जानकारी देते हुए।

- बीके सीनियर सैकेंडरी स्कूल में बच्चों को करवाया 45 मिनट का ध्यान सैशन

भिवानी। शनिवार को आयुष विभाग भिवानी ने बवानीखेड़ा में द्वितीय अंतर्राष्ट्रीय ध्यान दिवस डे के अवसर पर ध्यान का सैशन कवाया गया। इस मौके पर जिला योग कोर्डिनेटर डा. संजय वैद ने कहा कि सभी को अपनी जीवनशैली में ध्यान को अपनाना चाहिए। ध्यान शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के लिए जरूरी है।

बच्चों को ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए क्योंकि इस समय मस्तिष्क सबसे अधिक सक्रिय और ग्रहणशील होता है। उस समय यदि हम ध्यान करते है तो उससे हमारी याददाश्त कई गुणा बढ़ जाती है। ध्यान से एकाग्रता को बढ़ाने के लिए एवं नाड़ी शुद्धि के प्राणायाम जैसे अनुलोम-विलोम से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है। बीके सीनियर सैकेंडरी स्कूल के प्रांगण में आयुष विभाग के योगाचार्य गजानंद शास्त्री ने बच्चों को बताया कि हरियाणा योग आयोग व महानिदेशक आयुष हरियाणा तथा जिला प्रशासक के निर्देशानुसार सभी को ध्यान करना चाहिए। यदि हम अपनी दिनचर्या को व्यवस्थित कर ले और योग व मैडिडेशन को अपनी पढ़ाई का हिस्सा बना लें।

भिवानी। ध्यान मेडिटेशन का अभ्यास करती बीके बहन व साधक। फोटो : हरिभूमि

महिलाओं को राजयोग मेडिटेशन का व्यावहारिक अभ्यास करवाया

भिवानी। चांदवास गांव में विश्व ध्यान दिवस पर प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की कादमा शाखा ने "गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाने में मेडिटेशन का महत्व" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया। कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी नीलम बहन ने महिलाओं को संबोधित करते हुए विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा कि भागदौड़ भरी जिंदगी में ध्यान मेडिटेशन के नियमित अभ्यास से जीवन को सुख, शांति व आनंद से भरपूर कर गृहस्थ को आनंदमय बना सकते हैं। ब्रह्माकुमारी नीलम बहन ने कहा कि आज की व्यस्त और तनावपूर्ण जीवनशैली में महिलाएं अनेक जिम्मेदारियों का निर्वहन करती हैं, ऐसे में मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन अत्यंत आवश्यक है। मेडिटेशन के माध्यम से मन को स्थिर कर सकारात्मक सोच विकसित की जा सकती है।

एचडी स्कूल में हिंदी ओलम्पियाड का आयोजन

हरिभूमि न्यूज ▶▶| चरखी दादरी

- लगभग 252 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

बिरोहड़ स्थित एचडी पब्लिक स्कूल में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं विद्यार्थियों की भाषाई दक्षता को निखारने के उद्देश्य से हिंदी ओलंपियाड का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कक्षा छठी से आठवीं तक के लगभग 252 विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। परीक्षा संयोजक हरिओम शास्त्री ने बताया कि हिंदी ओलंपियाड का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ाना व उनकी रचनात्मक सोच, व्याकरणिक समझ, शब्द भंडार एवं अभिव्यक्ति क्षमता को सुदृढ़ करना है। प्रश्न पत्र को विद्यार्थियों की कक्षा-स्तर के अनुरूप रोचक, ज्ञानवर्धक और संतुलित रखा गया, जिससे उनकी वास्तविक क्षमता का आकलन हो सके। विद्यालय के निदेशक बलराज फौगाट कहा कि हिंदी हमारी मातृभाषा होने के साथ-साथ हमारी संस्कृति एवं संस्कारों की वाहक है। आज प्रतिस्पर्धात्मक युग में हिंदी के प्रति गर्व और सम्मान बनाए रखना आवश्यक है, ऐसी प्रतियोगिताएं विद्यार्थियों में आत्मविश्वास बढ़ाने के साथ-साथ बौद्धिक विकास में भी सहायक सिद्ध होती हैं। विद्यालय की प्राचार्या नमितादास ने विद्यार्थियों की सराहना करते हुए कहा कि हिंदी ओलम्पियाड जैसे आयोजन बच्चों को भाषा की गहराई समझने और सही व प्रभावी अभिव्यक्ति सीखने का अवसर प्रदान करते हैं। उन्होंने शिक्षकों की मेहनत और विद्यार्थियों के अनुशासन की प्रशंसा की तथा भविष्य में भी ऐसे शैक्षिक आयोजनों को निरंतर आयोजित करने की बात कही।

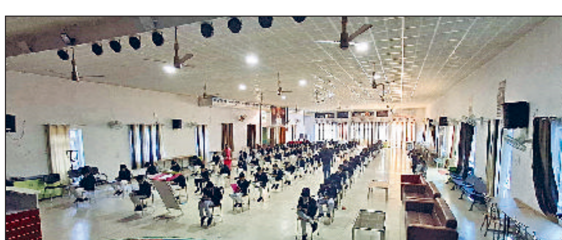

चरखी दादरी। प्रतियोगिता में हिस्सा लेते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

खबर संक्षेप

वामपंथी दल पूरे देश में कल करेगा प्रदर्शन

भिवानी। वामपंथी दलों ने मनरेगा में बदलावों के खिलाफ पूरे देश में 22 दिसम्बर को विरोध प्रदर्शन का निर्णय लिया है, सीपीएम सीपीआई जिला कमेटियों के जिला सचिव कामरेड ओमप्रकाश और फूलसिंह इन्दोरा ने संयुक्त रूप से ब्यान जारी कर कहा कि 22 दिसम्बर को बस स्टैंड के पीछे पूर्वमंत्री ठाकुर बीरसिंह पार्क में इकट्ठे होकर उपायुक्त के माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भिजवाया जाएगा।

जयंती एवं प्रतिभा सम्मान का आज होगा आयोजन

भिवानी। सैनी कल्याण परिषद द्वारा 21 दिसंबर को हनुमान ढाणी स्थित सैनी धर्मशाला में आयोजित होने वाली महाराजा शूरसैनी जयंती एवं प्रतिभा सम्मान समारोह की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। शनिवार को धर्मशाला परिसर में कार्यक्रम की तैयारियों का जायजा लेने के बाद सैनी कल्याण परिषद के प्रधान भूप सिंह सैनी ने समाज के प्रबुद्ध जनों और सैनी कल्याण परिषद के सदस्यों के साथ बैठक की और कार्यक्रम की अंतिम रूपरेखा तय की। सांसद धर्मवीर सिंह मुख्य अतिथि होंगे।

विदेश भेजने के नाम पर लिए रुपये वापस नहीं किए तो उठाया कदम

बेरला में दंपति ने लगाया फंदा एफएसएल टीम मौके पर पहुंची

सैलून संचालक व उनकी पत्नी ने की आत्महत्या, गांव के युवक पर मामला दर्ज

■ पुलिस ने सुसाइड नोट मिलने का दावा किया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बाढ़ड़ा

गांव बेरला में शुक्रवार रात्रि दंपति ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों की सूचना पर पुलिस ने पहुंचकर शवों को उतारा तथा फोरेंसिक विभाग की टीमों ने जांच कर दादरी के सामान्य अस्पताल में शवों को पोस्टमार्टम के लिए ले गए है।

मामले में पुलिस ने सुसाइड नोट मिलने का दावा किया है तथा उसके आधार गांव के युवक पर विदेश भेजने के नाम पर एक लाख पाचास हजार रुपये वापस नहीं करने से परेशान होकर आत्महत्या करने की बात कहीं है, जिसके खिलाफ पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है। पुलिस को दिए ब्यान में मृतक के भाई सोमबीर उर्फ सोनू ने बताया कि 32 वर्षीय विष्णु सैन ने साथ लगते गांव दगड़ौली बस स्टैड पर सैलून चलाकर परिवार की आजीविका चलाता था।

भिवानी। पुलिस स्टेशन में बेरला के ग्रामीणों से चर्चा कर जांच करती पुलिस टीम।

शुक्रवार रात्रि को दोनों ने घर पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। उन्होंने बताया कि पहले महिला संगीता ने फांसी लगाई, जिसके बाद उसके पति विष्णु ने भी फांसी लगा ली। सुबह परिजनों ने उन्हें कमरे में लटका देखा तो आनन फानन में उतारा, लेकिन तब तक दोनों दम तोड़ चुके थे। ग्रामीणों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस टीम ने एफएसएल की टीम को मौके पर बुलाकर फिंगर प्रिंट एकत्रित करवाया। दोपहर बाद शवों को चरखी दादरी के सामान्य अस्पताल में भेजा गया, जहां देर शाम तक पोस्टमार्टम नहीं हो पाया था।

बताया जा रहा है कि दंपति ने मरने से पहले गांव के ही राजेश नामक युवक पर विदेश भेजने के नाम पर एक लाख 50 हजार रुपये हड़पने एवं वापस नहीं लौटाना का आरोप लगाया।

23 वर्षीय लड़की व दस वर्षीय बेटा हो गया अनाथ

मृतक दंपति अपने पीछे एक 23 वर्षीय लड़की व दस वर्षीय पुत्र को छोड़ गए हैं, जिनका रो रोकर बुरा हाल है। कार्यकारी थाना प्रभारी सुरेन्द्र सिंह ने कहा कि घटनाक्रम की जानकारी मिलते ही पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शवों को कब्जे में लेकर शवों का पोस्टमार्टम के लिए दादरी अस्पताल भिजवाया। पुलिस ने सुसाइड नोट व मृतक के भाई के ब्यान पर आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस ने मामला दर्ज किया

उसकी पत्नी बीमार है और राजेश के कारण दोनों को परेशानी से जूझना पड़ रहा है, जिससे उनको आत्महत्या करनी पड़ रही है। पुलिस ने मृतक के बड़े भाई सोमबीर सोनू के ब्यान पर आरोपी राजेश के खिलाफ आत्महत्या के लिए दबाव बनाने की कार्यवाही का मामला दर्ज कर जांच शुरु कर दी है।

हरियाणा पंचायत कंप्यूटर ऑपरेटर संघ सीएम के नाम सौंपेगा ज्ञापन

भिवानी। हरियाणा पंचायत कम्प्यूटर ऑपरेटर संघ की बैठक को संबोधित करते वक्ता। फोटो : हरिभूमि

भिवानी। भारतीय मजदूर संघ से संबंधित हरियाणा पंचायत कम्प्यूटर ऑपरेटर संघ के भिवानी जिलाध्यक्ष सुबोध ने भिवानी में कर्मचारियों की बैठक को संबोधित करते हुए बताया कि सरकार हरियाणा पंचायत कम्प्यूटर ऑपरेटरों की मांगों के समाधान को लेकर गंभीर नहीं है। उन्होंने बताया कि प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने जनवरी 2025 में बहादुरगढ़ और रोहतक रैली में सीपीएलओ कर्मचारियों की मांगों के समाधान को लेकर आश्वासन दिया था, लेकिन अभी तक मांगों के समाधान को लेकर कोई कदम नहीं उठाया है।

आंदोलन करेंगे तेज

सुबोध ने बताया कि 13 दिसंबर को कैथल में भारतीय मजदूर संघ के प्रदेश महामंत्री हवासिंह महला की अध्यक्षता में हुई प्रदेश स्तरीय बैठक सरकार की अनदेखी पर रोष प्रकट किया और निर्णय लिया कि इसको लेकर 24 दिसंबर को सभी जिला मुख्यालयों पर भारतीय मजदूर संघ के नेतृत्व में संगठन द्वारा उपायुक्त के माध्यम से मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नाम ज्ञापन सौंपा जाएगा। जिलाध्यक्ष सुबोध ने बताया कि बैठक में हरियाणा पंचायत कम्प्यूटर ऑपरेटर संघ की प्रदेश कार्यकारिणी और जिला कार्यकारिणी के सदस्य उपस्थित रहे। उन्होंने बताया कि बैठक में महला ने संगठन को आश्वस्त किया कि अगर सरकार ने सीपीएलओ कर्मचारियों की जायज मांगों का समाधान नहीं करती है तो भविष्य में आंदोलन को तेज किया जाएगा।

बवानीखेड़ा। मांगों को लेकर ज्ञापन सौंपते हुए। फोटो : हरिभूमि

निर्माण मजदूरों की मांगों को विस में उठाने की मांग

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेडा

संयुक्त निर्माण मजदूर मोर्चा हरियाणा के आह्वान पर, भिवानी के मोर्चा प्रतिनिधिमंडल ने भवन निर्माण मजदूरों की ज्वलंत मांगों को विधानसभा सत्र में उठाने को लेकर बवानी खेड़ा विधायक कपूर सिंह वाल्मीकि के नाम पर विधायक के पीए को ज्ञापन सौंपा व विधानसभा में निर्माण मजदूरों व मनरेगा मजदूरों की मांगों को उठाने की मांग की। प्रतिनिधिमंडल में सीटू नेता कामरेड अनिल कुमार, राममेहर सिंह, इंटक नेता रामोतार खोरड़ा, पवन शेखावत, राकेश बलियाली, एटक नेता फूल सिंह इंदौरा शामिल हुए। ध्यान रहे कि 14 दिसंबर को हजारों निर्माण मजदूरों ने कुरुक्षेत्र मुख्यमंत्री आवास पर जोरदार प्रदर्शन किया था। बवानीखेड़ा विधायक कपुर सिंह वाल्मिकी के पीए ने निर्माण मजदूरों की समस्याओं को विस में उठाने का आश्वासन दिया।

सयुक्त निर्माण मजदूर मोर्चा के नेताओं ने बातचीत में बताया कि 15 दिसंबर को सयुक्त निर्माण मजदूर मोर्चा हरियाणा के प्रतिनिधि मंडल के साथ बातचीत में मुख्यमंत्री के वैक ने निर्माण मजदूरों की मांगों का जल्द से समाधान का आश्वासन दिया था। उनसे हुई बातचीत में बंद पड़े पोर्टल को खोलकर मजदूरों को लाभ दिए जाने, मनरेगा के बंद किए गए कामों को शामिल करके मजदूरों को काम दिए जाने पर कार्यवाही करने को सहमति जताई। इसके साथ साथ ग्रेप 3 की वजह से प्रभावित निर्माण मजदूरों के बंद हुए काम की भरपाई करने पर भी उन्होंने सहमति जताई थी। लेबर कोड रद्द किए जाने की मांग पर उन्होंने, यूनियनों की आपत्ति मांगी।

पड़ाव डालने की चेतावनी दी

संयुक्त मोर्चा के नेताओं ने हरियाणा के सभी विधायकों को ज्ञापन देकर विधानसभा में निर्माण मजदूरों की आवाज उठाने की मांग की है। अगर निर्माण मजदूरों के मुद्दों का जल्द समाधान किया जाता है तो 17, 18 जनवरी 2026 को हिसार, भिवानी, जींद, अंबाला में मंत्रियों के आवास पर दो दिवसीय दिन रात का पड़ाव डाले जाने की चेतावनी दी। भिवानी, दादरी, महेन्द्रगढ व रेवाडी के हजारों निर्माण मजदूर भिवानी मंत्री श्रुति चौधरी के आवास पर पड़ाव डालने के लिए मजबूर होगे।

आरती फौगाट का एसबीआई में प्रोबेशनरी ऑफिसर पद पर चयन

चरखी दादरी। मेहनत एवं दृढ़ संकल्प से कोई भी मुकाम हासिल किया जा सकता है, इसे सच कर दिखाया है आरती फौगाट ने। एपीजे स्कूल के पूर्व अकाउंटेंट नरेश कुमार फौगाट की सुपुत्री आरती फौगाट वार्ड नंबर 13 निवासी सैनी गंज मोहल्ला का चयन देश के सबसे बड़े सार्वजनिक क्षेत्र के भारतीय स्टेट बैंक में प्रोबेशनरी ऑफिसर के गौरवपूर्ण पद पर हुआ है। इस बड़ी उपलब्धि पर आरती के पिता नरेश कुमार फौगाट ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि ये सब ईश्वर की असीम अनुकंपा और बेटी की कड़ी मेहनत का परिणाम है। उन्होंने कहा कि भगवान की कृपा से आज मेरी बेटी आरती ने न केवल हमारा, बल्कि पूरे समाज का मान बढ़ाया है। उसकी इस सफलता से हम सभी अत्यंत गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। बेटी का चयन पहले ही एसबीआई ऐज क्लर्क पिछले साल हो गया था। आज जैसे ही आरती के चयन की खबर मिली, परिवार और जान-पहचान वालों में खुशी की लहर दौड़ गई। एपीजे स्कूल के पूर्व सहयोगियों और मित्रों ने नरेश कुमार फौगाट को बधाई देते हुए आरती के उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। वार्ड वासियों का कहना है कि आरती फौगाट की ये सफलता सभी युवाओं के लिए प्रेरणा है, जो बैंकिंग क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं। एक साधारण परिवार से आने वाली आरती ने साबित कर दिया कि लक्ष्य स्पष्ट हो और प्रयास निरंतर हो तो सफलता अवश्य कदम चूमती है।

लेफ्टिनेंट रीना ने सर्वश्रेष्ठ एनसीसी अधिकारी का खिताब जीतकर लहराया परचम

भिवानी। मनुष्य द्वारा किसी भी रूप में किए गए कार्य उनके उन्नति के शिखर तक पहुंचाने में अहम कार्य करते है यह बात एनसीसी ऑफिसर ट्रेनिंग अकादमी ग्वालियर में आयोजित पीआरसीएन कोर्स में सर्वश्रेष्ठ एनसीसी अधिकारी का खिताब जीतकर लौटी महाविद्यालय की एनसीसी ऑफिसर लेफ्टिनेंट रीना के महाविद्यालय लौटने पर उन्हें सम्मानित करते हुए महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ.संजय गोयल ने कही।

130 अधिकारियों ने लिया था भाग

लेफ्टिनेंट रीना ने कहा कि इस तरह के कोर्सों में भाग लेते हुए अनेकों प्रतियोगिता में भाग लेकर पदक जीतना बहुत ही सराहनीय कार्य है। महाविद्यालय की एन सी सी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ रीना की इन सफलताओ पर वैश्य महाविद्यालय ट्रस्ट के अध्यक्ष एडवोकेट शिवरतन गुप्ता,महासचिव डॉ.पवन बुवानीवाला, वैश्य महाविद्यालय प्रबन्धक समिति के अध्यक्ष अजय गुप्ता ,महासचिव भिवानी के विधायक घनश्याम सर्राफ, कोषाध्यक्ष बृजलाल सर्राफ, ट्रस्टी विजयकिशन अग्रवाल,प्राचार्य डॉ. संजय गोयल,एन सी सी अधिकारी कैप्टन डॉ. अनिल तंवर, डॉ मनीष कुमार ने उन्हें बधाई दी। भारत के विभिन्न राज्यों से 130एन सी सी अधिकारियों ने ट्रेनी के रूप में भाग लेते हुए अनेकों प्रतियोगिताओं में प्रतिभागिता की। उन्होंने बताया की इस कोर्स में हमारे वैश्य महाविद्यालय भिवानी की एन सी सी अधिकारी लेफ्टिनेंट डॉ रीना ने सर्वश्रेष्ठ एनसीसी अधिकारी का खिताब अपने नाम किया।

कबड्डी खिलाड़ी का सेना में चयन होने से गांव में खुशी का माहौल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

■ देश सेवा में समर्पित और गाँव का नाम रोशन करना उद्देश्य

एक तरफ जहां परिवार में बेटी होने को लेकर लोगों के मन में संकोच पैदा होता था लेकिन आज के समय में बेटियां बेटों से काम नहीं है हर क्षेत्र में बेटों से कंधे से कंधा मिलाकर आगे की पंक्ति में खड़ी मिलती है चाहे वह राजनीति का मंच हो या खेलों का अखाड़ा तथा वही देश की रक्षा का जब सवाल उठता है तो बेटियां अपने हाथों में बंदूके लेकर एक प्रहरी के रूप में हमारी सीमाओं पर पहरा देते हुए खड़ी मिलती है इसी का जीता जागता उदाहरण है एक किसान परिवार की बेटी जिसकी आयु 19 वर्ष है पहले तो उसने खेलों में अपना डंका बजाया तथा अब खेलों के साथ-साथ सेवा में भर्ती होकर भारत माता की रक्षा के लिए तट पर तैयार खड़ी होने को उत्सुक है। कुंगड़ गाँव की बेटी साक्षी का बीएसएफ में चयन हुआ है।

साक्षी के पिता गांव में ही खेती-बाड़ी करते हैं। वही साक्षी का एक बड़ा भाई जो अभी 20 वर्षीय छात्र है वह भी अपनी पढ़ाई कर रहा है। 19 वर्षीय साक्षी का खेल प्रदर्शन आरक्षण के अंतर्गत बीएसएफ में जनरल ड्यूटी (जेडी) के पद पर चयन हुआ है। मध्यम वर्गीय परिवार में जन्मी साक्षी नेशनल कबड्डी खेलो में सफलता कर चुकी है हासिल। देश सेवा में समर्पित और गाँव का नाम रोशन करना साक्षी का उद्देश्य। वही ग्रामीणों ने बताया कि खेलोगे साथ-साथ साक्षी सेवा में भर्ती होकर अपने परिवार गांव जिले व राज्य का नाम रोशन करेगी। इसी को लेकर गांव में खुशी का माहौल बना हुआ है तथा दूसरे बच्चों को भी साक्षी के चयनित होने पर प्रेरणा मिलेगी।

चोरी मामले में पुलिस ने आठ आरोपी गिरफ्तार

बाढ़ड़ा। बालाजी ज्वैलर्स बाढ़ड़ा में चोरी करने के आठ आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है, जहां इनको चरखी दादरी न्यायलय में पेश कर तीन दिन के पुलिस रिमांड पर लिया है। पुलिस अधीक्षक ने दो दिन पूर्व ही चोरी के घटनास्थल का मौका मुआयना कर एसआईटी गठित की थी। शुक्रवार को एसआई पवन कुमार थाना बाढ़ड़ा ने चोरी करने के आरोपी अशान, शाहरुख, धरनौद, परसराम निवासी बिला खेड़ी थाना धरनावदा जिला गुन्ना, कुनाल व रोशन निवासी गांव रुसिया थाना कुरवई जिला विदिशा, अशुमन व मुख्तयार निवासी शिव कालोनी थाना कैन्ट जिला गुन्ना मध्यप्रदेश को कलियाणा घाटी से गिरफ्तार कर लिया है।

सीबीएलयू ने स्वदेशी शोध संस्थान के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

■ सीबीएलयू के शोध विद्वानों को स्वदेशी शोध संस्थान, नई दिल्ली में शोध कार्य करने का अवसर मिलेगा

चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय ने कुलगुरु प्रो दीप्ति धर्माणी के दिशा निर्देशन में स्वदेशी शोध संस्थान, नई दिल्ली के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। इस समझौते का उद्देश्य शैक्षिक सहयोग, शोध सहयोग और भारतीय ज्ञान प्रणाली और स्वदेशी विचार को बढ़ावा देना है।

विवि के कार्यकारी कुलसचिव डॉ जितेन्द्र भारद्वाज की मौजूदगी में डीन एफसीएम प्रो. सुनीता भरतवाल प्रो. प्रमोद मलिक, डॉ लखा सिंह और स्वदेशी शोध संस्थान के प्रतिनिधियों एडवोकेट गगनदीप और प्रो राजेंद्र ने भाग लिया। समझौते के तहत, दोनों संस्थाएं संयुक्त शोध, शैक्षिक आदान-प्रदान, प्रशिक्षण, कौशल विकास, उद्यमिता और मूल्य-आधारित शिक्षा को बढ़ावा देंगी।

एमओयू के तहत, सीबीएलयू के शोध विद्वानों को स्वदेशी शोध संस्थान, नई दिल्ली में शोध कार्य करने का अवसर मिलेगा, जहां उन्हें शैक्षिक संसाधनों, मार्गदर्शन और शोध वातावरण का लाभ मिलेगा। शिक्षा और शोध के माध्यम से राष्ट्रीय चरित्र निर्माण, नैतिक मूल्यों और आत्मनिर्भरता पर विशेष जोर दिया गया है। इस अवसर पर, दोनों संस्थानों के प्रतिनिधियों ने विश्वास व्यक्त किया कि यह साझेदारी पारंपरिक भारतीय ज्ञान और आधुनिक शैक्षिक प्रथाओं को एकीकृत करके राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देगी।

आज हनुमान ढाणी में होगा भव्य आयोजन

भिवानी। हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी महाराजा शूर सैन सेन सैनी की जयंती भिवानी में श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाई जाएगी। जयंती समारोह की तैयारियों को लेकर भिवानी के कोर्ट परिसर में पत्रकारों से बातचीत करते हुए भाजपा जिला शहरी प्रभारी व जिला बार एसो. की उपाध्यक्षा अधिवक्ता रेनू बाला सैनी ने महाराजा शूर सेन सैनी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे एक महान योद्धा, कुशल प्रशासक और समाज सुधारक थे। उन्होंने अपने जीवन में समाज को एकजुट रखने और न्याय की स्थापना के लिए कार्य किया। सैनी ने कहा कि महाराजा शूर सेन का जीवन आज के युवाओं के लिए प्रेरणास्रोत है।

चोरों ने दो दुकानों को बनाया निशाना एक में विफल हुए तो दूसरी में सफल

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बवानीखेड़ा

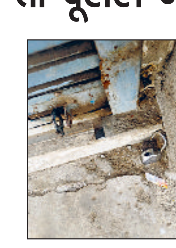

■ नगदी से भरा गल्ला ले गए चोर

बवानीखेड़ा में चोरों द्वारा दो किरयाणा स्टोर की दुकानों को निशाना बनाया जिसमें एक दुकान के ताले तोड़ने में विफल हुए तो दूसरी दुकान के ताले तोड़कर नगदी वाला गल्ला उठाकर ले गए।

दुकानदार केशव ठकराल ने बताया कि उसने बाबा कमाल मंदिर के सामने गुरूकृपा किरयाणा स्टोर नाम से दुकान की हुई है। शुक्रवार रात 8 बजे वह दुकान बढ़ाकर घर गया और शनिवार सुबह 8 बजे आकर देखा तो उसकी दुकान का एक ताला टूटा हुआ था और दुकान के उपर लगे कैमरों को जांचने पर पाया की चोर बाइक पर आए और उनके वाहन का नंबर साफ दिखाई दे रहा है। चोरों ने एक दुकान के ताले को तोड़ डाला और सीसीटीवी कैमरे की भनक होने पर राड़ से उसे उपर करने का काम किया लेकिन अन्य दो कैमरों की निगरानी से नहीं बच सके। वहीं राड़ से दुकान के शटर को तोड़ने का प्रयास किया लेकिन उसमें असफल रहे।

वहीं दूसरे दुकानदार प्रेम हांडा ने बताया कि उसकी पुराना नगर पालिका रोड़ बिचला बाजार में किरयाना की दुकान है। सुबह आकर देखा तो उसकी दुकान के ताले टूटे हुए थे और देखने पर उसके पैरों तले से जमीन खिसक गई। दुकान के गल्ला और नकदी गायब मिली।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन नं. : 8814999151, 9253681005, 8295157800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5×8 सें.मी 10×8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2000/- रु. 2500/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
भिवानी : हरिभूमि, शॉप नं. 47, इम्प्रूवमेंट ट्रस्ट मार्केट, भिवानी
फोन : 8814999170, दादरी : 9253681008

महाराजा शूरसैनी केवल एक समाज के नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के गौरव : सर्राफ

52 संस्था, 50 से अधिक विद्यार्थी, 20 से अधिक खिलाड़ी और 25 से अधिक रक्तदाता सम्मानित

■ सभी वक्ताओं ने महाराजा शूरसैनी के दिखाए मार्ग पर चलने और समाज में शिक्षा व एकता को बढ़ावा देने पर जोर दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶ भिवानी

सैनी नगर स्थित रविदास मंदिर रोड पर शनिवार को भगवान श्रीराम के वशंज महाराजा शूरसैनी जयंती के उपलक्ष्य में जिला स्तरीय महाराजा शूरसैनी जयंती समारोह का आयोजन किया गया। श्री सैनी धर्मशाला धर्मार्थ ट्रस्ट, नवदुर्गा सेवा सहयोग संस्था और महात्मा ज्योतिबा फुले धर्मार्थ ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम में भारी संख्या में लोगों ने शिरकत की।

समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक के पुत्र अमन सर्राफ ने शिरकत की तथा अति विशिष्ट अतिथि के तौर पर नप के चेयरपर्सन प्रतिनिधि भवानी प्रताप, पूर्व चेयरमैन मामनचंद प्रजापति, मार्केट कमेटी लोहारू के वाईस चेयरमैन सुभाष सैनी, समाजसेवी परमानंद सैनी, पहुंचे। कार्यक्रम में मंच का संचालन जेई बिजेश जावला व मीडिया कोर्डिनेटर सुरेश सैनी ने किया। सभी वक्ताओं ने महाराजा शूरसैनी के दिखाए मार्ग पर चलने और समाज में शिक्षा व एकता को बढ़ावा देने पर जोर दिया।

महापुरुषों के संघर्षों से सीख लें

समारोह में उत्कृष्ट कार्य करने वाली हस्तियों को सम्मानित किया गया। आयोजकों द्वारा 50 से अधिक मेधावी विद्यार्थियों , 25 से अधिक रक्तदाताओं , 20 से अधिक राष्ट्रीय स्तर के खिलाडियों को सम्मानित किया। समाजसेवा के क्षेत्र में अग्रणीय रहने वाली 52 सामाजिक संस्थाओं को भी सम्मानित किया किया। कार्यक्रम के दौरान कल्चर थिएटेर एंड वेलफेयर सोसायटी से हेमंत सैनी ने सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी। अतिथियों ने कहा कि महाराजा शूरसैनी केवल एक समाज के नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के गौरव हैं। उन्होंने युवाओं से आह्वान किया कि वे अपने इतिहास और महापुरुषों के संघर्षों से सीख लें।

गुप्त व यौन रोग
गुप्त रोग, नामर्दी, शीघ्रपतन, धात, स्वप्न दोष, वीर्य/कम शुक्राणु आदि से छुटकारा पाएं।
जोश व टाईम बढ़ाएं
सैक्स समस्याएं ऑनलाइन सलाह लें - 9728321662
ताकत का कोर्स लें Rs.750/-
पिछले 25 वर्षों से सेवारत
जुनेजा क्लीनिक
9728321662
भिवानी रोजाना मिलें (9 am to 7 pm)
पता: 1stफ्लोर, रोहतक गेट, इण्डियन पेट्रोल पम्प के सामने, निकट सब्जी मण्डी
YouTube/Facebook पर देखें/फॉलो करें-जुनेजा क्लीनिक भिवानी

क्रिसमस स्पेशल

सदियों से मनाया जा रहा प्रभु यीशु के जन्मोत्सव को समर्पित क्रिसमस का पर्व, अब किसी एक क्षेत्र या वर्ग का नहीं ग्लोबल फेस्टिवल बन चुका है। वैश्विक प्रेरणाओं, मानवीय मूल्यों और व्यक्तिगत संवेदनाओं के संगम से आज का क्रिसमस हमें यह सोचने का अवसर देता है कि हम सिर्फ उत्सव न मनाएं बल्कि उत्सव बन जाएं। यही इस दौर के क्रिसमस की सबसे बड़ी और सबसे सकारात्मक उपलब्धि है।

कवर स्टोरी / आर. सी. शर्मा

खुशी-उल्लास-उमंग का ग्लोबल फेस्टिवल क्रिसमस

क्रिसमस एक ऐसा पर्व है जो एक समय तक धार्मिक उत्सव के रूप में मनाया जाता था, लेकिन आज इक्कीसवीं सदी में यह वैश्विक संवेदना, मानवीय एकजुटता और सामूहिक खुशी का प्रतीक बन चुका है। बदलती तकनीक, तेज रफ्तार जीवनशैली, वैश्वीकरण और सामाजिक विविधताओं के बीच भी क्रिसमस का रोमांच कम नहीं हुआ बल्कि कई अर्थों में और गहरा हुआ है।

परंपरा-आधुनिकता का संगम

आज के दौर में क्रिसमस सिर्फ चर्च की घंटियों, कैरोल्स गाने या क्रिसमस ट्री सजाने तक सीमित नहीं है बल्कि यह एक ऐसा अवसर बन चुका है, जहां परंपरा और आधुनिकता एक-दूसरे में घुल-मिल जाती हैं। सोशल मीडिया पर फैली रोशनियां, डिजिटल ग्रीटिंग्स, वर्चुअल पार्टियां और ऑनलाइन गिफ्टिंग, इन सबने क्रिसमस को एक नए स्वरूप से सजा दिया है। जहां पहले क्रिसमस का अनुभव स्थानीय समुदाय तक सीमित रहता था, वहीं आज यह एक ग्लोबल इवेंट बन गया है। न्यूयॉर्क की सड़कों से लेकर टोक्यो, मुंबई और नैरोबी तक हर जगह क्रिसमस की सजावट, संगीत और उल्लास एक साझा भाव पैदा करता है।

खुशियों का नया एहसास

हाल के दशकों में क्रिसमस को लेकर हमारी भावनाओं में निश्चित ही बदलाव आया है। आधुनिक जीवन में तनाव, प्रतिस्पर्धा और अकेलापन बढ़ा है। ऐसे में क्रिसमस एक भावनात्मक विराम की तरह आता है, जहां लोग रुककर रिश्तों, यादों और मानवीय जुड़ाव को महत्व देते हैं। आज की खुशियां सिर्फ उपहारों तक सीमित नहीं रहीं। मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक सुरक्षा और साथ होने की अनुभूति अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। क्रिसमस के समय परिवार या दोस्तों के साथ बैठकर खाना खाना, पुरानी यादें साझा करना या किसी जरूरतमंद की मदद करना, इन सबमें एक गहरी संतुष्टि छिपी है। यानी खुशी की मात्रा नहीं, लेकिन उसकी गुणवत्ता बदली है। यह अधिक संवेदनशील और अधिक मानवीय हुई है।

करुणा-साझेदारी की प्रेरणा

इक्कीसवीं सदी का क्रिसमस हमें कुछ बेहद महत्वपूर्ण वैश्विक प्रेरणाएं देता है। आज क्रिसमस के साथ चैरिटी, फूड ड्राइव्स, शेल्टर होम्स और ऑनलाइन फंड रेजिंग जुड़ चुके हैं। लोग यह समझने लगे हैं कि सच्चा उत्सव तभी है, जब खुशियां दूसरों के संग बांटी जाएं। क्रिसमस अब सिर्फ ईसाइयों का पर्व नहीं रह गया। गैर-ईसाई समाज भी इसे एक मानवीय और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में मनाता है, जो विविधता में एकता का संदेश देता है। युद्ध, संघर्ष और अस्थिरता के वर्तमान दौर में क्रिसमस का 'पीस ऑन अर्थ' वाला विचार, पहले से ज्यादा प्रासंगिक हो गया है। यह हमें याद दिलाता है कि शांति कोई अमूर्त सपना नहीं बल्कि रोजमर्रा के छोटे व्यवहारों से भी संभव है।

महत्वपूर्ण है अर्थपूर्ण उत्सव

यह सच है कि आधुनिक क्रिसमस में बाजार का प्रभाव बढ़ा है। सेल्स, ऑफर्स और ब्रांडिंग हर जगह दिखती है। लेकिन इसके समानांतर एक नई सोच भी उभर रही है, मिनिमल और अर्थपूर्ण क्रिसमस। आज कई लोग 'कम खरीदो, बेहतर जियो' के विचार के साथ क्रिसमस मना रहे हैं। हैंडमेड गिफ्ट्स, अनुभव आधारित उपहार (जैसे समय देना, साथ घूमना) और पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार सजावट। ये बदलाव बताते हैं कि खुशी की अतिरिक्त परतें दिखावे से नहीं, सार्थकता से आती हैं।

क्रिसमस मनाने के ऐतिहासिक-धार्मिक संदर्भ

क्रिसमस ईसाई धर्म का सबसे बड़ा पर्व है, जिसे यीशु मसीह के जन्म की स्मृति में मनाया जाता है। ईसाई मान्यता के अनुसार यीशु का जन्म मानवता को पाप, हिंसा और अन्याय से मुक्ति दिलाने के लिए हुआ था। बाइबिल की कथा के अनुसार, यीशु का जन्म बेथलेहम में एक गौशाला में हुआ, जहां उनकी माता मरियम ने उन्हें जन्म दिया और यूसुफ उनके संरक्षक बने। यह कथा ईसाई धर्म में विनम्रता, त्याग और करुणा का मूल प्रतीक मानी जाती है। 25 दिसंबर को क्रिसमस मनाने की परंपरा यीशु के जन्मदिवस से जुड़ी है। इतिहासकारों के अनुसार चौथी शताब्दी में रोमन साम्राज्य ने 25 दिसंबर को यीशु के जन्म दिवस के रूप में स्वीकार किया। इसका एक कारण यह भी था कि इसी समय रोम में 'सैटर्नेलिया' और 'सोल इन्विक्टस' जैसे सूर्य-उत्सव मनाए जाते थे। ईसाई धर्म के प्रसार के दौरान इन लोकप्रिय पर्वों को एक नए धार्मिक अर्थ के साथ जोड़ा गया, जिससे क्रिसमस व्यापक रूप से स्वीकार्य हो सका।

धार्मिक दृष्टि से क्रिसमस सिर्फ जन्मोत्सव नहीं बल्कि ईश्वर के प्रेम के अवतरण का प्रतीक है। ईसाई आस्था के अनुसार यीशु 'ईश्वर के पुत्र' हैं, जो मानव रूप में धरती पर आए ताकि प्रेम, क्षमा और दया का संदेश दे सकें। इसी कारण क्रिसमस के दौरान चर्चों में विशेष प्रार्थनाएं, मध्यरात्रि मिस्सा, कैरोल गायन और बाइबिल पाठ किए जाते हैं।

क्रिसमस सेलिब्रेशन से जुड़ी परंपराएं

क्रिसमस को पारंपरिक रूप से एक धार्मिक, पारिवारिक और सामुदायिक उत्सव के रूप में मनाया जाता है। इसकी तैयारियां एडवेंट काल से शुरू होती हैं, जो क्रिसमस से लगभग चार सप्ताह पहले आता है। इस दौरान लोग आत्मचिंतन, प्रार्थना और संयम पर ध्यान देते हैं। कई परिवार, घरों में एडवेंट कैंडल जलाते हैं, जो आशा और प्रकाश का प्रतीक मानी जाती है। घरों और चर्चों की सजावट, क्रिसमस की सबसे प्रमुख परंपरा है। क्रिसमस-ट्री सजाना भी इसका प्रमुख अंग है, जिसे रोशनी, सितारों, घंटियों और सजावटी गेंदों से सजाया जाता है। ट्री के ऊपर लगाया जाने वाला तारा बेथलेहम के उस तारे का प्रतीक है, जिसने तीन ज्ञानी पुरुषों को यीशु के जन्मस्थल तक पहुंचाया था। साथ ही कई स्थलों पर नैटिविटी सीन (यीशु के जन्म का दृश्य) लगाया जाता है। क्रिसमस ईव (24 दिसंबर की रात) को चर्चों में मिडनाइट मास होती है, जिसमें प्रार्थना, बाइबिल पाठ और सामूहिक कैरोल्स गाए जाते हैं। क्रिसमस के दिन परिवार और मित्र एक साथ मिलते हैं, विशेष भोज का आयोजन होता है और एक-दूसरे को उपहार दिए जाते हैं। बच्चों के लिए सांता क्लॉज की परिकल्पना खास आकर्षण होती है, जो उदारता और खुशी बांटने का प्रतीक है।

सकारात्मक प्रेरणाओं का उत्स

आज के संदर्भ में क्रिसमस हमें तीन सबसे सकारात्मक बातें सिखाता है।

उम्मीद: चाहे दुनिया कितनी भी अनिश्चित क्यों न हो, क्रिसमस उम्मीद का पर्व है। यह नए सिरे से शुरू करने की प्रेरणा देता है।

रिश्तों की प्राथमिकता: यह पर्व याद दिलाता है कि जीवन की असली पूंजी हमारे संबंध हैं, न कि भौतिक उपलब्धियां।

मानवीय गरिमा: क्रिसमस का मूल संदेश- प्रेम, क्षमा और करुणा, आज भी उतना ही प्रासंगिक है, जितना सदियों पहले था। कहने का सार यही है कि इक्कीसवीं सदी में क्रिसमस फेस्टिवल का रोमांच बाहरी चमक से ज्यादा आंतरिक अर्थ में बसता है। हमारी खुशियां शायद अधिक सजावटी नहीं हुईं, लेकिन अधिक सजग जरूर हुई हैं। *

अमेजिंग / शिखर चंद जैन

दुनिया के सबसे अनूठे क्रिसमस-ट्री

क्रिसमस के अवसर पर दुनिया भर में बेशुमार क्रिसमस ट्री सजाए जाते हैं। लेकिन कुछ क्रिसमस ट्री इतने अनूठे तरीके से सजाए जाते हैं कि उनकी भव्यता देखते ही बनती है। यहां हम आपको दुनिया के कुछ ऐसे ही अमेजिंग क्रिसमस ट्री के बारे में बता रहे हैं।

क्रिसमस का उत्सव क्रिसमस-ट्री के बिना अधूरा है। वैसे तो क्रिसमस-ट्री वास्तव में पाइन, देवदार, बालसम या फर का पेड़ होता है। ये पेड़ सदा हरे-भरे रहते हैं इसलिए, इन्हें सजावट के लिए चुना जाता है। लेकिन दुनिया भर में अलग-अलग चीजों के उपयोग से एक से बढ़कर एक कृत्रिम क्रिसमस-ट्री भी खूब बनाए और सजाए जाते हैं। आइए जानते हैं कुछ अनूठे क्रिसमस-ट्री के बारे में।

टंबलवीड ट्री यूएसए: चांडलर, संयुक्त राज्य अमेरिका के एरिजोना राज्य में मैरिकोपा काउंटी में स्थित शहर और फीनिक्स का एक उपनगर है। यह तकनीक और नवाचार का एक प्रमुख केंद्र है। यहां टंबलवीड-ट्री नामक प्रसिद्ध क्रिसमस-ट्री है, जिसे हर साल एक खास परंपरा के तहत बनाया जाता है। 1957 से चली आ रही इस परंपरा में हजारों टंबलवीड्स और रोशनी का उपयोग होता है। इसकी शुरुआत तब हुई, जब आग लगने से शहर की क्रिसमस की सजावट नष्ट हो गई थी। तब लोगों ने इस अनूठे पेड़ का इस्तेमाल किया था। यह पारंपरिक क्रिसमस-ट्री की तरह नहीं है, बल्कि सूखी झाड़ियों (टंबलवीड्स) को इकट्ठा करके बनाया जाता है। इसे बनाने के लिए लगभग 1,000 से अधिक टंबलवीड्स और 1,200 रंगीन बल्बों का उपयोग किया जाता है।

बिग क्रिसमस-ट्री इटली: यह दुनिया के सबसे अनूठे और सबसे ज्यादा लाइटों वाले क्रिसमस-ट्रीज में शामिल है। इटली के गुब्बीओ में माउंट इजिनो पर बना यह विशाल-ट्री 1981 से मौजूद है। यह दुनिया के सबसे बड़े क्रिसमस-ट्री के रूप में जाना जाता है, जिसे 1991 में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया था। यह माउंट इंगिनो की ढलान पर हजारों लाइटों और 7.5 किमी लंबे बिजली के तार से बना एक भव्य लाइट डेकोरेशन से बनता है, जो एक विशाल क्रिसमस-ट्री का आकार लेता है। इसकी ऊंचाई लगभग 750 मीटर और आधार पर चौड़ाई 450 मीटर होती है। इसे आमतौर पर 7 दिसंबर से 6 जनवरी तक सजाया जाता है। हर साल क्रिसमस के समय हजारों पर्यटक इसे देखने आते हैं।

स्काई ट्री जापान: क्रिसमस के अवसर पर जापान के टोक्यो में कई प्रसिद्ध क्रिसमस ट्री और लाइट-अप शोज डेकोरेट किए जाते हैं, जिनमें टोक्यो स्काई-ट्री का विशालकाय क्रिसमस-ट्री भी शामिल है। टोक्यो स्टेशन के मारुनोउची क्षेत्र के पास किट्टे बिल्डिंग के बाहर जापान का यह सबसे बड़ा क्रिसमस-ट्री सजाया जाता है। यह 14 मीटर ऊंचा है। इसे आकर्षक रोशनी से सजाया गया है। यहां लगभग 500,000 बल्ब्स का शो आयोजित होता है, जो 'क्विंकल थ्री स्टार्स' और अन्य लाइट-अप थीम के साथ प्रदर्शित किया जाता है। किट्टे बिल्डिंग टोक्यो में सबसे ऊंची इमारत है, जो इसका प्रतीक चिन्ह भी बन गया है। इनके निकट ही स्थित ग्योको-डोरी स्ट्रीट और नाका-डोरी स्ट्रीट को भी उत्सव की रोशनी से सजाया जाता है। इसके अतिरिक्त क्रिसमस के अवसर पर यहां के ओमोतेसांडो, रोपोंगी और ओडेबा जैसे कई क्षेत्रों में सुंदर लाइटिंग डिस्प्ले आयोजित किए जाते हैं।

ओरिगामी क्रिसमस-ट्री यूएसए: न्यूयॉर्क का वर्ल्ड फेमस ओरिगामी क्रिसमस-ट्री, किसी भी दूसरे क्रिसमस-ट्री से अलग है। यह अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री (एएमएनएच) में मौजूद है। यह लगभग 13 फीट लंबा पेड़, कागज से बने हुए जानवरों, जड़ी-बूटियों और अन्य आकृतियों से सजाया जाता है, जो ओरिगामी कलाकारों द्वारा बनाए जाते हैं। विभिन्न प्रकार के ओरिगामी रंगों में सजा यह पेड़ देखने में बहुत आकर्षक और बेहद रंगीन लगता है। *

रॉकफेलर सेंटर क्रिसमस-ट्री यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका

रॉकफेलर सेंटर क्रिसमस-ट्री, 3 दिसंबर की शाम से ही आम लोगों के देखने के लिए अपनी सजधज के साथ रेडी हो जाता है। यह 75 फुट ऊंचा नॉर्वे स्प्रूस पेड़ है, जो ईस्ट ग्रीनबुश, न्यूयॉर्क से लाया गया है। इसे मैनहट्टन के मध्य में 30 रॉकफेलर प्लाजा में सजाया जाता है। यह 10 जनवरी तक देखने के लिए उपलब्ध रहता है। 2004 से स्थापित यह क्रिसमस ट्री 30,000 एलईडी लाइटों से रोशन होता है, जो सौर पैनलों से चलती हैं। 2007 से इस पर 550 पाउंड का स्वारोवस्की क्रिस्टल स्टार लगा हुआ है।

कविता / हेमधर शर्मा

कृतज्ञता और कृतघ्नता

जो देता है हम उसे देवता कहते हैं
फिर क्यों हरदम लेने की
इच्छा रखते हैं?
जड़ जिन्हें समझते हैं हम
पौधे-पेड़ सभी तो देते हैं
फिर याचक बनकर ही
खुश क्यों हम रहते हैं?
हो सकता है हों बुद्धिमान हम
दुनिया में सबसे ज्यादा
खुदगर्ज बनाए लेकिन जो
क्या बुद्धि उसी को कहते हैं?
लेता है कोई काम अगर
प्रतिदान नहीं देता है तो
अन्यायी उसे समझते हैं
फिर जड़-चेतन सबसे लेकर
मन में कृतज्ञ भी हो न सके
ऐसा कृतघ्न मानव बनकर
कैसे हम सब जी लेते हैं?

व्यंग्य / सूर्यकुमार पांडेय

अपने यहां आजकल जो भी होता है, कैमरे के सामने ही होता है। इसकी एक चमक के आगे दुनिया की हर चमक-दमक फीकी है। कैमरा नहीं, तो शादी-ब्याह तक में भी किसी की कमर न लचके।

कैमरों की चमकती चंचल चाहतें

अपने यहां आजकल जो भी होता है, कैमरे के सामने ही होता है। इसकी एक चमक के आगे दुनिया की हर चमक-दमक फीकी है। कैमरा नहीं, तो शादी-ब्याह तक में भी किसी की कमर न लचके। वह तो यह कैमरा ही है, जिसके आते ही तमाम बाराती नागिन हो जाते हैं और उनकी रूमाल से अपने आप ही बीन की धुनें निकलने लग जाती हैं। सोचता हूं, कहीं कल जंगल में मोर भी यह कहकर नाचने से इनकार न कर दें कि इधर कैमरे तो हैं ही नहीं। जब कोई फिल्म ही नहीं बना रहा, तो फिर जंगल में ऐसे नाच का आखिर फायदा भी क्या?

धरना, प्रदर्शन, अनशन, घेराव, रैली, भाषण, चुनाव, सबको कैमरे चाहिए। वह भी ऐसे-वैसे नहीं, समाचार चैनलों वाले। एक नहीं, अनेक। हर कोण से कवरेज जरूरी है। जिस काम को दुनिया न देखे, वह काम भी किस काम का? जिन्हें इन कैमरों से ज्यादा लगाव होता है, ऐसे साहसी लोग गुप्त कैमरों से भी भय नहीं खाते। यह जानते हुए कि जमाना स्टिंग ऑपरेशन का है और कभी भी धरे जा सकते हैं, वे तब भी अपना असली काम कर ही डालते हैं।

'आप कैमरे की नजर में हैं।' मैं जहां कहीं पर भी यह बोर्ड लगा देखता हूं, मुझे हंसी आने लगती है। ऐसे बोर्ड चोर को पकड़ने के लिए लगाए गए होते हैं कि उन्हें सहयोग करने के लिए कि यहां हरकत की, तो तू पकड़ा जा सकता है। जा, बिना कैमरे वाली जगह तलाश। मैं सोचता हूं, यदि चोर भी सीसीटीवी कैमरों से भयग्रस्त होकर अपना चौर्य-कर्म त्याग चुके होते, तो हम आए दिन चोरी की वारदात की खबरें पढ़ने, सुनने और देखने को तरस जाते। क्या पता, कैमरा उन्हें नया उत्साह देता हो। अब तो कैमरों को प्रोफेशनल फोटोग्राफरों की दरकार भी नहीं रही। सभी के हाथों में मोबाइल कैमरे हैं और सेल्फियों की चमकती हुई चंचल चाहतें। इसके एकनेत्री स्वरूप पर आज पूरा विश्व मोहित है। तभी तो, युद्ध हो या शांति, लोग अपनी आंखों से अधिक इन कैमरों की दिखलाई हुई चीजों पर विश्वास करने लगे हैं। *

लघुकथा / चंद्रप्रकाश डाले

उपेक्षा के आंसू

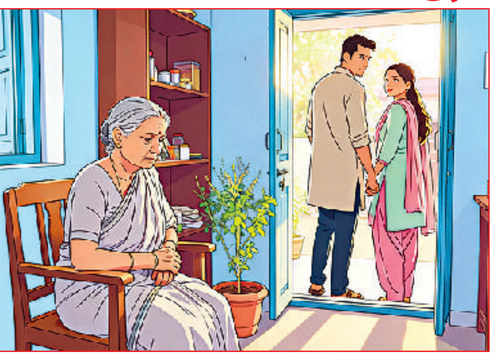

एआई इमेज

अस्पताल में चार दिनों से भर्ती सविता जी ने नर्स से पूछा, 'सिस्टर, मेरा बेटा आया था क्या?'

नर्स बोली, 'अरे माता जी, आप चार दिन से यही रट लगाए हैं कि बेटा आया है क्या, अरे आज तो आपकी छुट्टी होने वाली है।'

मां की आंखों में आंसू आ गए। रुंधे गले से बोलीं, 'मैं उसकी मां हूं ना। मैंने बड़ी तकलीफ, त्याग और तपस्या से उसको पाला है। इसलिए बार-बार उसके बारे में पूछती हूं। खैर, कोई बात नहीं।'

नर्स बोली, 'माता जी, बस आप तैयार हो जाइए, अस्पताल से छुट्टी मिल गई है, अब आपको घर जाना है, अपने बेटे के पास। आपके बिल वगैरह सब बन गए, उसका पेमेंट भी मिल चुका है।'

सविता ने फिर पूछा, 'मेरा बेटा लेने आया है क्या?'

'नहीं माता जी, ड्राइवर गाड़ी लेकर आया है।' नर्स ने बताया।

कुछ न कहकर, आंखों में आंसू छुपाते हुए सविता जी गाड़ी में बैठकर घर पहुंच गईं, लेकिन बेटे की उपेक्षा से खुद को थका हुआ और निराश महसूस कर रही थीं।

कुछ देर बाद ही बहू के मायके से फोन आया कि उसकी मां की तबियत खराब हो गई है। बहू ने तत्काल अपने पति को ऑफिस में फोन किया और बोली, 'आप तुरंत घर आ जाइए, मेरी मां की तबियत बहुत खराब है। और सुनो चार-पांच दिनों की छुट्टी भी ले लेना। मां को अस्पताल में भर्ती कराकर उनकी देखभाल के लिए वहां रुकना होगा।'

सासु मां की तबियत की खबर सुनकर सविता जी का बेटा तत्काल घर आ गया और जल्दी से तैयार होकर अपनी पत्नी के साथ ससुराल जाने लगा। दरवाजे से बाहर निकलते हुए जैसे उसे कुछ याद आया और वह पलटकर अपनी मां से बोला, 'मां, हम दोनों चार-पांच दिन के लिए जा रहे हैं। आप घर का ख्याल रखना।'

मां ने उन दोनों को जाते हुए देखा। मायूस होकर पास रखी कुर्सी पर बैठ गई। सोचने लगी, अस्पताल में भी वह अकेली थी, अब घर में भी अकेली है। साथ में थे तो सिर्फ आंसू। उपेक्षा से उपजे आंसू। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

अंतस को छूते गीत

वरिष्ठ साहित्यकार ओम निश्चल के गीतों का नया संग्रह 'तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं' हाल में छपकर आया है। आज के दौर में जब छंदमुक्त कविताओं की बाढ़ आई हुई है, ऐसे में अत्यंत कोमलता को खुद में समेटे हुए, रुई के फाहे-से ये गीत हमारी रूह को हौले से छू लेते हैं। इन गीतों में खास तौर पर प्रेम के अनेक रंग तो पैबस्त हैं ही, इनके साथ ही जीवन की विडंबनाएं, अलग-अलग ऋतुओं का सौंदर्य, खेती-किसानी, मिट्टी का सोंधापन, सांस्कृतिक नगरों की छटा, पारंपरिक पर्वों की आभा, ईश्वर के प्रति अहैतुक आस्था और कुछ अनकहे से रिश्तों की खुश्बू को भी शिद्दत से महसूस किया जा सकता है। गीतों के रचाव और शब्दों के चयन में ओम जी प्रयोगधर्मी रहे हैं, किसी भाषा को लेकर उनकी रचनात्मकता में कोई हठधर्मिता नहीं दिखती है। इसके साथ ही वे पढ़ने वाले के अंतस में भावनाओं का अप्रतिम प्रतिसंसार भी रचते चलते हैं। इसकी बानगी संग्रह के कई गीतों में देखी जा सकती है। अतीत में घटित प्रेम को बेहद मार्मिकता से वे शब्दों में पिरोते हुए कहते हैं, *'पलकें बोझिल और उनींदी रातें होती थीं/बरसों पहले तुमसे कितनी बातें होती थीं।'* तो कहीं जीवन की क्रूरता के समक्ष विवश मन कराह उठता है, *'प्रार्थना में फूल, मन में अर्घ्य देकर/लौट आए डबडबाई आंख लेकर।'* कहीं अपने आराध्य प्रभु की भक्ति में गीतकार का मन पुलकित होकर गा उठता है, *'दीप घर-घर जले हैं अवध में पिया/आज लौटे अयोध्या में रघुवर-सिया।'* तो कहीं प्राचीन नगर के सांस्कृतिक वैभव को देखकर वे अंतस के उल्लास को व्यक्त करने से रोक नहीं पाते, *'काशी के घाट निराले, रे भैया/काशी के घाट निराले।'* और प्रेम मिलन को व्यक्त करती ये पंक्तियां तो बेमिसाल हैं, *'पलकों को होठों की धड़कन से छू लूं/सुनाऊं गजल कोई गालिब की तुमको/तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं।'* *

पुस्तकः तुम्हें मीर के एक मिसरे से छू लूं (गीत-संग्रह), रचनाकारः ओम निश्चल, मूल्यः 300 रुपए, प्रकाशकः हिंदी अकादमी, दिल्ली

अवसर जब क्रिसमस का हो तो केक का जिक्र होता ही है। घर-घर में इसे बनाया और फ्रेंड्स-रिलेटिव्स के संग एंज्वॉय भी किया जाता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि केक बनाने की शुरुआत कब हुई? इसका आकार, स्वाद कैसे बदला? जानिए, केक से जुड़ी कुछ रोचक बातें।

टेस्टी केक से जुड़ी अनूठी-रोचक बातें

रोचक / शिखर चंद जैन

बच्चे ही नहीं, बड़ी उम्र के भी अधिकांश लोगों को केक खाना पसंद होता है। किसी का बर्थडे हो या मैरिज एनिवर्सरी या कोई और सेलिब्रेशन, खुशी और जश्न के खास मौकों पर केक कट कर खिलाने का चलन है। केक खाने में जितने यमी होते हैं, उतनी ही दिलचस्प इससे जुड़ी कुछ बातें भी हैं। इनके बारे में यहां बता रहे हैं।

कैसा था शुरुआती केक: शुरुआती दौर में बनने वाले केक आज की तरह सॉफ्ट, डिजाइनर और अट्रैक्टिव नहीं होते थे। ये अनाज के बने हुए सघन और चपटे (डेंस और फ्लैट) होते थे। इन्हें पीसे हुए अनाजों में खमीर (यीस्ट) उठाकर बनाया जाता था। फिर इन्हें सुखाकर जमाया जाता था। आज हम जिस तरह के केक का आनंद लेते हैं, उनसे मिलते-जुलते केक 18वीं-19वीं शताब्दी में बनने शुरू हुए।

ऐसे हुई क्रिसमस केक की शुरुआत: रोम में शुरुआती दौर में क्रिसमस के अवसर पर मीठी रोटियां बनाई जाती थीं। मध्यकाल तक आते-आते इन मीठी रोटियों का स्थान प्लम-पॉरिज (आलू बुखारा, ओट्स, फ्रूट्स, ड्राय फ्रूट्स आदि मिलाकर बनाया गया दलिया) ने ले लिया। 16वीं सदी तक आटे, अंडे,

मक्खन से प्लम केक बनने शुरू हो गए। इसे 'ट्वेल्थ नाइट केक' कहा जाता था। धीरे-धीरे ये ट्वेल्थ नाइट केक, क्रिसमस के उत्सव का एक अभिन्न हिस्सा बन गए। आज क्रिसमस के अवसर पर हम जो 'फ्रूट केक' या 'आइस्ड केक' खाते हैं, वह इसी ट्वेल्थ नाइट केक का अपडेटेड वर्जन है।

केक पर सर्वाधिक कैंडल्स जलाने का रिकॉर्ड: क्या आप जानते हैं कि बर्थडे केक पर सबसे अधिक कैंडल्स जलाने का एक वर्ल्ड रिकॉर्ड भी है? जन्मदिन के केक पर सबसे ज्यादा मोमबत्तियां जलाने का विश्व रिकॉर्ड 2016 में आश्रिता फुरमान और न्यूयॉर्क स्थित श्री चिन्मय केंद्र ने बनाया था, जब केक पर 72,585 मोमबत्तियां जलाई गई थीं। यह केक ध्यान गुरु श्री चिन्मय के 85वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में बनाया गया था। श्री चिन्मय केंद्र के 100 सदस्यों ने मिलकर यह अनोखा वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया था।

बर्थडे पर केक काटने की शुरुआत: जन्मदिन के अवसर पर दुनिया के अधिकांश देशों में केक काटा जाता है, खाया-खिलाया जाता है। माना जाता है कि 16वीं-17वीं सदी में जर्मनी में पहली बार छोटे बच्चों का जन्मदिन मनाने के लिए केक बनाना शुरू किया गया। इस केक को 'किंडरफेस्ट' कहा जाता था। ये केक दिखने में आज के केक से काफी मिलते-जुलते होते थे। फिर धीरे-धीरे केक बर्थडे सेलिब्रेशन का महत्वपूर्ण हिस्सा बनता गया।

पॉपुलर केक फ्लेवर्स: जन्मदिन के केक की बात करें तो ज्यादातर लोगों के लिए चॉकलेट सबसे पसंदीदा फ्लेवर होता है, उसके बाद नंबर आता है वनीला फ्लेवर का। जर्मन चॉकलेट केक दुनिया के सबसे मशहूर केक्स में से एक है। इंटरेस्टिंग बात यह है कि 'जर्मन चॉकलेट केक' की उत्पत्ति जर्मनी में नहीं हुई थी। दरअसल, इसका संबंध सैमुअल जर्मन नामक एक अमेरिकी व्यक्ति से था, जिन्होंने 1852 में एक डार्क बेकिंग चॉकलेट बनाई थी। इसे 'जर्मन्स स्वीट चॉकलेट' के नाम से जाना जाता था। 1957 में इस रेसिपी का इस्तेमाल केक बनाने में किया गया और 'जर्मन्स चॉकलेट केक' शीर्षक से प्रकाशित किया गया था। तब से इसे इसी नाम से जाना जाता है। *

केक से रिलेटेड कुछ इंटरेस्टिंग फैक्ट्स

- दुनिया का सबसे महंगा केक 'पाइरेट्स फैंटेसी' था जिसकी कीमत लगभग 35 मिलियन डॉलर थी।

- शिकागो के पैट्रिक बर्टोलेटी 'डीप डिश' ने 2012 में छह मिनट में 72 कप केक खाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।
- कप केक की रेसिपी गूगल पर सबसे ज्यादा सर्च की जाने वाली रेसिपीज में से एक है।
- दुनिया का सबसे ऊंचा केक बनाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड इंडोनेशिया की राजधानी जकार्ता के कुछ स्कूली बच्चों के नाम है। 33 मीटर (108.27 फीट) ऊंचे इस केक को हाकासिमा-निलासरी कलिनरी स्कूल के बच्चों ने क्रिसमस के अवसर पर बनाया था।
- पुराने जमाने में इंग्लैंड में मान्यता थी कि तकिए के नीचे 'फ्रूट केक' रखकर सोने से सुंदर पति मिलता है। इसे 'ड्रीमिंग केक' भी कहा जाता था।

पहला मैरिज फंक्शन केक

आजकल शादियों में भी केक काटने का ट्रेंड बढ़ने लगा है। यह परंपरा कब से शुरू हुई, यह तो पुख्ता तौर पर नहीं कहा जा सकता, मगर पहले विवाह केक का उल्लेख 1858 में मिलता है। यह ब्रिटेन की महारानी विक्टोरिया की सबसे बड़ी बेटी (उसका नाम भी विक्टोरिया था) के मैरिज फंक्शन के लिए बनाया गया था। प्रिंसेस विक्टोरिया का विवाह केक तीन गज चौड़ा और 300 पाउंड वजन का था, लेकिन वह सिर्फ एक मंजिला था। उनकी शादी के केक पर सफेद आइसिंग का पहली बार इस्तेमाल किया गया था। तभी से इस तरह की आइसिंग को 'रॉयल आइसिंग' के नाम से जाना जाता है।

जानकारी / अलका 'सोनी'

इसलिए कहते हैं मैरी क्रिसमस!

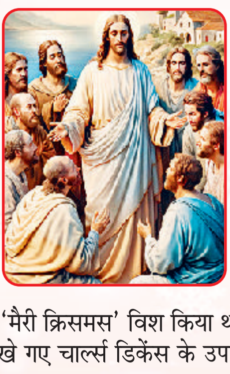

क्रिसमस का त्योहार लगभग पूरी दुनिया में मनाया जाता है। सभी देश अपने-अपने तरीके से इसे मनाते हैं। इसे मनाने का तरीका चाहे जो भी हो, एक बात जो हर जगह कॉमन होती है वह है क्रिसमस की शुभकामनाएं एक-दूसरे को देते हुए 'मैरी क्रिसमस' बोलना। अन्य मौकों पर, चाहे वो न्यू ईयर हो या फिर होली, दीवाली जैसे त्योहार। लोग एक-दूसरे को 'हैप्पी' बोलकर शुभकामनाएं देते हैं, जैसे- 'हैप्पी न्यू ईयर', 'हैप्पी दिवाली' आदि। लेकिन क्रिसमस के लिए बोलते हैं- मैरी क्रिसमस।

कैसे हुई 'मैरी क्रिसमस' बोलने की शुरुआत: क्रिसमस विश करने के लिए 'मैरी क्रिसमस' बोलने की शुरुआत को लेकर कई संदर्भ मिलते हैं। सन 1534 में लंदन के बिशप जॉन फिशर ने क्रिसमस के मौके पर हेनरी अष्टम के प्रमुख मंत्री थॉमस क्रोमवेल को पत्र लिखकर 'मैरी क्रिसमस' विश किया था। इसके अलावा मैरी क्रिसमस बोलने का उल्लेख 1843 में लिखे गए चार्ल्स डिकेंस के उपन्यास 'ए क्रिसमस कैरोल' में भी किया गया है।

मदर मैरी के सम्मान में: ईसा मसीह की मां 'मरियम' ईसाई धर्म में बहुत सम्मानित मानी जाती हैं। उन्हें सभी ईसाइयों की माता और मानव जाति में सर्वोच्च इंसान माना जाता है। मरियम को 'मैरी' नाम से भी जाना जाता है। इसलिए एक मान्यता यह भी है कि मदर मैरी के प्रति सम्मान प्रकट करते हुए 'हैप्पी क्रिसमस' के स्थान पर 'मैरी क्रिसमस' बोलकर क्रिसमस विश किया जाता है।

मतलब है समान: 'मैरी' शब्द का अर्थ हर्षित, आनंदित या उल्लासपूर्ण होता है। यह शब्द अकसर उत्सव और खुशी के अवसरों के साथ जुड़ा होता है। 'हैप्पी' का अर्थ होता है 'खुश' या 'संतुष्ट'। कुछ भाषाविदों का मानना है कि 'हैप्पी' व्यक्तिगत खुशी पर जोर देता है, जबकि 'मैरी' सामूहिक और सांस्कृतिक उत्सव की खुशियों को व्यक्त करता है। क्रिसमस विश करने के लिए 'मैरी' शब्द इसलिए उपयुक्त माना जाता है क्योंकि यह उत्सव और उल्लास के सामूहिक अभिव्यक्ति को बेहतर ढंग से प्रकट करता है। बहरहाल, मैरी या हैप्पी दोनों ही शब्दों का प्रयोग खुशी जाहिर करने के लिए ही किया जाता है। इसलिए आप इनमें से कुछ भी बोलकर विश कर सकते हैं। *

हम जो चाहते हैं, हमेशा वैसा ही हो, यह हमारे हाथ में नहीं है। लेकिन खुश रहना हमारे हाथ में है। कुछ छोटी-छोटी बातों और आदतों को अगर हम अपने जीवन का हिस्सा बना लें तो यकीन मानिए, हम हमेशा खुश रह सकते हैं। ऐसी ही कुछ काम की बातों के बारे में जानिए।

अपना लें ये आदतें हमेशा रहेंगे खुश

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

किसी ने कितनी सही बात कही है, 'अपने दुःखों को भगाने का एक ही रास्ता है, खुश रहना।' सब खुश रहना चाहते हैं लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि खुशियों को अपने दामन में समेट कर कैसे रखा जाए? डॉ. ए. शिंडलर के अनुसार, 'दुःख ही सभी मनोदैहिक रोगों का एकमात्र कारण है और खुशी ही एकमात्र उपचार है।' डिजीज शब्द का अर्थ ही दुःख की अवस्था है। डिज-ईज यानी आराम से न रहना। दरअसल, खुशी एक मानसिक स्थिति है, जो काफी हद तक हमारी आदतो पर निर्भर करती है।

क्या है हैप्पी-ओलॉजी: विशेषज्ञों का मानना है कि खुशी हासिल करने का एक वैज्ञानिक नजरिया भी होता है और हर कोई अपने दैनिक जीवन में खुश होने के लिए छोटे-छोटे कारण ढूंढ़ सकता है। इसे ही 'हैप्पी-ओलॉजी' कहते हैं। इसके मुताबिक किसी वस्तु, व्यक्ति या स्थिति से खुश या संतुष्ट होना आपके ऊपर निर्भर करता है। आप चाहें तो किसी बात से चिढ़कर गुस्सा या उदास हो सकते हैं और आप चाहें तो इन नकारात्मक भावनाओं से ऊपर उठकर खुद को खुश रख सकते हैं, यानी खुश रहना हमारे हाथ में है। सुविख्यात लेखक एवं विद्वान डेल कार्नेगी ने भी कहा है, 'प्रसन्नता बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करती, वह हमारे मानसिक दृष्टिकोण से संचालित होती है।' विलियम जेम्स ने कहा है, 'हम इसलिए नहीं हंसते कि हम खुश हैं, बल्कि हम इसलिए खुश हैं कि हम हंसते हैं।'

खोज लीजिए अपना हैप्पियोलॉजिस्ट: व्यवहार विशेषज्ञ कहते हैं, आप खुद अपना हैप्पियोलॉजिस्ट खोज सकते हैं। अपने इर्द-गिर्द ऐसे एक इंसान को ढूंढ़ निकालें, जो आपके हिसाब से सदा खुश रहता है और उसे अपना आदर्श यानी हैप्पियोलॉजिस्ट बना लें। आप देखेंगे कि ये लोग जरा-जरा सी बातों में ही बच्चों की तरह खुश हो जाते हैं और खिलखिलाकर हंसने लगते हैं। ये खुशी हमारे सोचने के तरीके पर निर्भर करती है। कोई चाहे तो 10 रुपए की ऑरेंज आइसक्रीम खाकर खुश और संतुष्ट हो सकता है, वहीं आदतन दुःखी रहने वाला इंसान 100-150 की ब्रांडेड आइसक्रीम खाकर भी दुःखी ही नजर आएगा और उसके स्वाद में कोई न कोई नुक्स ढूंढ़ निकालेगा।

छोटी-छोटी चीजों में खोज लें खुशी: वैज्ञानिकों ने अपनी स्टडीज में पाया है कि खुश होने के लिए आप बड़ी चीजों का इंतजार न करें, छोटी-छोटी बातों में खुशी ढूंढ़ें। मिरियम लीगलर ने अपनी पुस्तक 'फाइंडिंग योर इनर हैप्पियोलॉजी' में लिखा है, 'हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में बहुत-सी सामान्य चीजें ऐसी हैं, जिनसे हम खुशी महसूस कर सकते हैं। बस इन चीजों के प्रति हमारा नजरिया ऐसा होना चाहिए।'

ठान लें कि खुश रहना है: वाल्टेयर ने कहा है, 'मैंने खुश रहना चुना, क्योंकि यह मेरे स्वास्थ्य के लिए लाभदायक है।' इस संबंध में अब्राहम लिंकन की बात भी बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा था, 'अधिकांश लोग लगभग उतने ही खुश होते हैं, जितना खुश रहने का वे मन बनाते हैं।'

हैप्पियोलॉजिस्ट सुजाना हैलोनेस किसी समय एक दुःखी और निराश इंसान थीं। उन्हें अपनी जिंदगी और जॉब से बेशुमार शिकायतें थीं। एक दिन अचानक उन्होंने खुद को बदल डाला। अब वे हैप्पीनेस के प्रोजेक्ट पर काम करती हैं और बेहद खुश रहती हैं।

खुशी से मिलेगी सफलता: सुजाना हैलोनेस अपनी वेबसाइट पर लिखती हैं, 'मैंने सीख लिया कि सफलता से खुशी नहीं मिलती बल्कि खुशी से सफलता मिलती है।' खुश रहने से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है, साथ ही हमारी क्रिएटिविटी और प्रोडक्टिविटी भी बढ़ती है। लोगों के साथ रिश्ते भी इंप्रूव होते हैं। जाहिर है, खुशी सफलता का माध्यम बन जाती है। सुजाना कहती हैं, 'खुशी एक अभ्यास है, मंजिल नहीं।'

मुस्कुराइए-हंसिए हर रोज: ब्रिटेन के हिप्नोटिस्ट और व्यवहार विज्ञानी पॉल मैकेना ने अपनी किताब 'आइ कैन मेक यू हैप्पी' में लिखा है कि रोज 20 बार हंसें और 20 बार मुस्कुराएं। भले ही आपको ऐसा जबरन करना पड़े। मुस्कुराने और हंसने से आपके शरीर में सेरोटोनिन रिलीज होता है, जो एक फील गुड हॉर्मोन है। कुछ दिनों बाद आप खुश रहने के अभ्यस्त हो जाएंगे। *

भारत में प्राचीन काल से ही एक से बढ़कर एक गणित के प्रकांड ज्ञानी हुए हैं। राष्ट्रीय गणित दिवस (22 दिसंबर) के अवसर पर हम आपको कुछ महान भारतीय गणितज्ञों के बारे में बता रहे हैं।

गणित को समृद्ध करने वाले भारत के महान गणितज्ञ

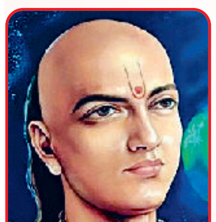
आर्यभट्ट

श्रीनिवास रामानुजन

सी. आर. राव

विभूतियां / नेहा जैन

यह हम भारतीयों के लिए गर्व का विषय है कि भारत के विद्वानों ने दुनिया को गणित के महत्वपूर्ण, मूलभूत सिद्धांतों और नियमों की जानकारी दी। 400 ई. से 1500 ई. के बीच के काल को भारतीय गणित का स्वर्ण युग कहा जाता है। इस काल में भारतीय गणितज्ञों ने कई नए गणितीय सिद्धांत दिए। भारतीय गणितज्ञों को कालखंड के हिसाब से मुख्यतया दो भागों में बांटा जा सकता है-पूर्ववर्ती काल के गणितज्ञ और आधुनिक भारत के गणितज्ञ। पूर्ववर्ती काल के गणितज्ञों में शामिल कुछ प्रमुख हस्तियां हैं-

आर्यभट्ट (476-550 ईस्वी): इन्हें भारतीय गणित का पिता माना जाता है। आर्यभट्ट ने अपने ग्रंथ 'आर्यभटीय' के माध्यम से गणितीय सोच में क्रांति ला दी। उन्होंने ही स्थानीय मान प्रणाली, शून्य की अवधारणा और त्रिकोणमितीय कार्यों के प्रारंभिक रूपों को प्रस्तुत किया। आर्यभट्ट ने ही 'पाई' के मूल्य की सटीक गणना की, बीजीय समीकरणों के समाधान प्रस्तावित किए और पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने की व्याख्या की। यह अवधारणा अपने समय से बहुत आगे थी।

ब्रह्मगुप्त (598-668 ईस्वी): शून्य को एक संख्या के रूप में मानने और उसके लिए नियम स्थापित करने वाले ब्रह्मगुप्त पहले व्यक्ति थे। इसके अलावा, उन्हें द्विघात समीकरण का पहला स्पष्ट विवरण देने और गुरुत्वाकर्षण को एक आकर्षक बल के रूप में वर्णित करने के लिए जाना जाता है। 'ब्रह्मस्फुट सिद्धांत' और 'खंडखाद्यक' उनकी दो सबसे प्रसिद्ध कृतियां हैं।

भास्कर प्रथम (600-680 ईस्वी): इन्होंने संख्याओं को लिखने के लिए हिंदू और अरबी दशमलव पद्धति का प्रयोग सबसे पहले किया था। 'आर्यभटीय' पर उनका विश्लेषणात्मक कार्य, 'आर्यभटीय भाष्य', खगोल विज्ञान और गणित पर सबसे प्राचीन संस्कृत ग्रंथ माना जाता है। उन्हें स्थानीय मान के अनुसार संख्याओं के निरूपण के लिए विशेष रूप से जाना जाता है।

भास्कर द्वितीय (1114-1185 ईस्वी): इन्होंने नक्षत्र वर्ष की लंबाई और चंद्रमा के समीकरण जैसी कई खगोलीय राशियों को परिभाषित किया था। अवकल कलन (डिफरेंशियल कैलकुलस) के सिद्धांतों की खोज, दशमलव प्रणाली का व्यवस्थित उपयोग भी इनकी देन है। इन्होंने ज्यामिति और बीजगणित से संबंधित महत्वपूर्ण ग्रंथों- 'लीलावती' और 'बीजगणिताध्याय' की रचना की।

संगमग्राम के माधव (1340-1425 ईस्वी): यूरोपीय 'कैलकुलस' से सदियों पहले इन्होंने त्रिकोणमितीय श्रृंखला विस्तार और घात श्रृंखला की खोज की और सूर्यकेंद्रित मॉडल (हीलियोसेंट्रिक मॉडल) जैसे महत्वपूर्ण ग्रहों की गति के मॉडल विकसित किए, जिससे खगोलीय गणनाओं में क्रांति आ गई। इस प्रतिभाशाली गणितज्ञ को साइन और कोसाइन जैसे त्रिकोणमितीय फलनों के लिए अनंत श्रेणी विस्तारों में उनके अग्रणी कार्य के लिए जाना जाता है।

आधुनिक भारत के प्रमुख गणितज्ञों में शामिल हैं-

श्रीनिवास रामानुजन (1887-1920): रामानुजन की स्मृति में ही गणित दिवस मनाया जाता है। इन्होंने संख्या सिद्धांत, गणितीय विश्लेषण आदि में उल्लेखनीय योगदान दिया। विभाजन फलन, सतत भिन्न और अनंत श्रेणी जैसे क्षेत्रों में उनकी उत्कृष्ट खोजों ने 20वीं सदी में गणित के विकास को बहुत प्रभावित किया। उन्हें अपने समय में आधुनिक विश्व का सर्वश्रेष्ठ गणितज्ञ माना जाता था।

शकुंतला देवी

पी.सी. महालनोबिस (1893-1972 ईस्वी): महालनोबिस दूरी और फ्रैक्टाइल ग्राफिकल विश्लेषण इनके कुछ प्रमुख योगदान हैं।

सी. आर. राव (1920-2023): भारतीय-अमेरिकी गणितज्ञ और सांख्यिकीविद् सी. आर. राव का सांख्यिकी, अर्थशास्त्र, आनुवंशिकी और चिकित्सा जैसे विविध क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा।

शकुंतला देवी (1929-2013): शकुंतला देवी को मानव-कंप्यूटर के नाम से जाना जाता था। वे कैलकुलेटर की सहायता के बिना अपनी त्वरित मानसिक गणनाओं के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध थीं। त्वरित मानसिक गणना के लिए उनका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी शामिल है। *

सिने ट्रेंड / अशोक वाधवाणी

कई हिंदी फिल्मों में क्रिश्चियन परिवेश, पात्रों और गीतों को बड़ी ही खूबसूरती से पेश किया जाता रहा है। कुछ फिल्में क्रिसमस सेलिब्रेशन से भी जुड़ी रही हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों पर एक नजर।

फिल्मों में क्रिश्चियन कैरेक्टर्स क्रिसमस सेलिब्रेशन

क्रिसमस, ईसाई धर्मावलंबियों का प्रमुख त्योहार है, जो भारत सहित विश्व भर में 25 दिसंबर को मनाया जाता है। इसे 'बड़ा दिन' भी कहते हैं। बीते दौर से लेकर हाल के वर्षों तक हिंदी में ऐसी कई सारी फिल्में बनती रही हैं, जिनमें क्रिसमस सेलिब्रेशन का जिक्र आया, उससे जुड़े गीत फिल्माए गए, मुख्य पात्र या फिर पूरी कहानी ईसाई समुदाय के इर्द-गिर्द घूमती रहती है। कई फिल्मों में तो ऐसे ईसाई पात्र दिखाए गए जो सिनेप्रेमियों के जेहन में आज भी दर्ज हैं।

ईसाई पात्र-परिवेश की कहानी: शोमैन राज कपूर ने ईसाई लड़की 'बॉबी' की कहानी पर फिल्म बनाई, जो हिट रही। 1973 में आई फिल्म 'बॉबी' में डिंपल कपाड़िया और ऋषि कपूर मुख्य भूमिकाओं में थे। हिंदू लड़के और क्रिश्चियन लड़की की इस जोड़ी को दर्शकों ने खूब पसंद किया। आगे चलकर, साल 1985 में इन्हीं डिंपल कपाड़िया और ऋषि कपूर को लेकर रमेश सिप्पी ने फिल्म 'सागर' बनाई। यह डिंपल कपाड़िया की कम-बैक फिल्म थी, जिसमें उन्होंने एक क्रिश्चियन लड़की मोना डी सिल्वा की भूमिका अदा की थी।

साल 1975 में आई फिल्म 'जूली' में एक्ट्रेस लक्ष्मी ने क्रिश्चयन लड़की जूली का लीड रोल प्ले किया था। साथ ही फिल्म के अन्य प्रमुख पात्र भी ईसाई धर्म से संबंध रखने वाले ही थे। इसी नाम से साल 2004 में एक बोल्ड फिल्म बनाई गई, जिसमें नेहा धूपिया ने गोवा में रहने वाली लड़की 'जूली' का रोल किया था। संजीव कुमार की फिल्म 'देवता' (1978) और 'चेहरे पे चेहरा' (1981) की कहानी ईसाई समाज और ईसाई पात्रों के ईर्द-गिर्द घूमती है।

नाना पाटेकर, मनीषा कोईराला और सलमान खान की फिल्म 'खामोशी : द म्यूजिकल' (1996) भी एक क्रिश्चियन परिवार के इर्द-गिर्द बुनी गई प्रेम कहानी है। इसके अलावा शबाना आजमी, मार्क रॉबिंसन, इरफान खान अभिनीत 'बड़ा दिन' (1998), और 'मैरी क्रिसमस' (2024) फिल्मों का नाम क्रिसमस फेस्टिवल पर रखा गया है। इन फिल्मों में इस धर्म-संस्कृति से जुड़े रीति-रिवाज, रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा आदि को भी बखूबी दर्शाया गया है।

यादगार पादरी के किरदार: ईसाई धर्मगुरु यानी पादरी को विशेष आदर, मान-सम्मान दिया जाता है। कई हिंदी फिल्मों में पादरी का कैरेक्टर निभाने वाले आर्टिस्ट्स को खूब सराहना मिली। 'दोस्त' (अभि भट्टाचार्य), 'अमर अकबर एंथोनी' (नाजिर हुसैन), 'तहलका' (जीतेंद्र), 'हत्या' (सत्येन कप्पू), 'खोज' (डैनी), 'देवता' (श्रीराम लागू) आदि कई फिल्में बनी हैं, जिनमें पादरियों के महत्वपूर्ण और यादगार रोल रहे।

कुछ पॉपुलर क्रिश्चियन कैरेक्टर: कई ऐसी फिल्में भी बनी हैं, जिनमें ईसाई कैरेक्टर या सहायक पात्र लोगों को खूब पसंद आए। 'अनाड़ी' में ललिता पवार का अपनी फिल्मी इमेज के विपरीत सहृदय ईसाई महिला मिसेज एल डीसा का अविस्मरणीय रोल था। ऐसे ही फिल्म 'गैंबलर' में जाहिरा, 'मेरा नाम जोकर' में सिमी ग्रेवाल, 'वो मैं नहीं' में आशा सचदेव, 'मजबूर' में प्राण, 'अल्बर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है' में नसीरुद्दीन शाह, 'जाने भी दो यारों' में सतीश शाह और 'अमर अकबर एंथोनी' में अमिताभ बच्चन द्वारा निभाया गया एंथोनी का कैरेक्टर लोग आज भी नहीं भूल पाए हैं।

'अमर अकबर एंथोनी' में एंथोनी गोंसाल्वेस के रोल में अमिताभ

गोवा में फिल्माई गई फिल्में: जब भी भारत में ईसाई परिवेश की बात होती है, गोवा का नाम सबसे पहले याद आता है। बॉलीवुड में ऐसी कई फिल्में बनीं, जिनकी अधिकतर शूटिंग गोवा में हुई। 'जोहर महमूद इन गोवा' (1965) में आई एस. जोहर और महमूद मुख्य भूमिका में थे। अमिताभ बच्चन की 'सात हिंदुस्तानी' (1969) और 'पुकार' (1983) इन तीनों फिल्मों की कहानी गोवा मुक्ति संग्राम पर आधारित थी। शाहरुख खान, सुचित्रा कृष्णमूर्ती अभिनीत 'कभी हां कभी ना' (1994) और शाहरुख खान, चंद्रचूड़ सिंह, ऐश्वर्या राय की फिल्म 'जोश' (2000) के मुख्य पात्र ईसाई ही थे। दोनों फिल्में गोवा में शूट की गईं। ऐसे ही दीपिका पादुकोण की फिल्म 'फाइंडिंग फैनी' (2014) गोवा में शूट हुई थी। इस फिल्म के सभी मुख्य पात्र ईसाई हैं। 'गो-गोवा-गॉन' (2013) गोवा में शूट की गई अलग टाइप की कॉमेडी, थ्रिलर है, जिसमें सैफ अली खान, कुणाल खेमू, पूजा गुप्ता आदि मुख्य भूमिकाओं में हैं। इस फिल्म के मुख्य पात्र भी क्रिश्चियन ही हैं। गोवा में शूट की गई अधिकतर फिल्मों में वहां के चर्च, बीच, ईसाई समुदाय के लोगों की जीवनशैली और संस्कृति को खूबसूरती से फिल्माया जाता रहा है। *

कई गीत भी हुए पॉपुलर

बॉलीवुड फिल्मों में ऐसे कई गाने भी बने हैं, जो पूरी तरह क्रिसमस से जुड़े हैं। इनमें से कुछ पॉपुलर भी हुए हैं। 'बचपन' फिल्म का गीत 'मदर मैरी, मां हम तेरे दुलारे हैं' प्रेयर है। 'शानदार' में संजीव कुमार सांता क्लॉज की वेशभूषा में गाते हैं, 'आता है, आता है, सांता क्लॉज आता है', 'जख्मी' में 'जिंगल बेल, जिंगल बेल, जिंगल ऑल द वे।' कई गीत ऐसे भी रचे हैं, जिनको सुनते ही समझ आ जाता है कि ये गीत या इसके पात्र ईसाई धर्म से जुड़े हुए हैं। फिल्म 'जमीर' में शम्मी कपूर पर फिल्माया गया गीत 'बड़े दिनों में खुशी का दिन आया...'। 'जूली' में प्रीती सागर की आवाज में अंग्रेजी गाना है, 'माइ हार्ट इज बीटिंग', 'जीते हैं शान से' में 'जूली-जूली जॉनी का दिल तुम पर आया जूली।' गाने में मिथुन चक्रवर्ती अपना प्रेम प्रकट करते हैं। 'सागर' में 'ओ मारिया, ओ मारिया' गाने में कमल हासन, डिंपल कपाड़िया की मस्ती देखने लायक है। 'देवता' का हटकर लिखा गाना है, 'चल बैठें चर्च के पीछे'। ये सभी गाने आज भी लोकप्रिय हैं।